रिमझिम-1

पहली कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

यह किताब .... की है।

0117

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished

0117 – रिमझिम-1
पहली कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-477-X

प्रथम संस्करण
जनवरी 2006 माघ 1927

पुनर्मुद्रण
जनवरी 2007 पौष 1929
नवंबर 2007 कार्तिक 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2011 माघ 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
अक्तूबर 2013 आश्विन 1935
नवंबर 2014 अग्रहायण 1936
मई 2016 वैशाख 1938
फ़रवरी 2017 माघ 1938
नवंबर 2017 अग्रहायण 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
सितंबर 2019 भाद्रपद 1941
जनवरी 2021 पौष 1942
नवंबर 2021 कार्तिक 1943

PD 300T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा ऐना प्रिन्ट ओ ग्राफ़िक्स प्रा. लि., 347-के, उद्योग केंद्र एक्सटेंशन-II, सैक्टर इकोटेक-III, ग्रेटर नोएडा 201 306 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*
संपादक : *मरियम बारा*
सहायक उत्पादन अधिकारी : *दीपक जैसवाल*

सज्जा
निधि वाधवा

आवरण
तापस गुहा

चित्रांकन
अनिल चैत्या वांगड़
जगदीश जोशी
तापस गुहा
धर्मशिला देवी
निज एनीमेशन एंड डिज़ाइन
निधि वाधवा
नारायण प्रधान
वी. मनीषा
संजीत कुमार पासवान

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् प्राथमिक पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह

© NCERT not to be republished

की अध्यक्ष प्रोफ़ेसर अनीता रामपाल और हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार, डॉ. मुकुल प्रियदर्शिनी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
20 दिसंबर 2005

© NCERT not to be republished

बड़ों से दो बातें

नई किताब अब आपके हाथों में है। यह किताब केवल एक पाठ्यपुस्तक ही नहीं बल्कि बच्चों के साथ मिलकर कविता गाने, कहानी सुनने-सुनाने, भाषा के रोचक खेल खेलने का एक ज़रिया भी है। किताब में इस बात के संकेत भी मिलते हैं कि बच्चों से बातचीत करने के लिए, उन्हें स्वयं सोचकर कुछ कहने, पढ़ने-लिखने के लिए, बेझिझक होकर स्वयं को अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास पैदा करने के लिए घर और स्कूल में कितने ही अवसर ढूँढ़े जा सकते हैं। दुनिया को समझने के लिए भाषा एक बढ़िया औज़ार का काम करती है। इसलिए ज़रूरी है कि हम दुनिया को बच्चों की निगाह से देखें और बच्चों की ज़िंदगी में भाषा के महत्त्व को समझें। अगर इस किताब का उपयोग करते समय कुछ महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखा जाए तो बच्चों के लिए भाषा सीखना एक आनंददायी दौर से गुज़रने के समान होगा।

- पहली कक्षा में आने वाले बच्चे **समृद्ध और विकसित मातृभाषा** ज्ञान के साथ आते हैं। वह अपनी भावनाओं और ज़रूरतों को भाषा के माध्यम से बखूबी अभिव्यक्त कर लेते हैं। वह अपने आसपास बोली जाने वाली भाषा को अनेक संदर्भों और स्थितियों में प्रयोग होते देखते हैं और अनुभव करते हैं कि भाषा के ज़रिए सभी अपनी इच्छाएँ और ज़रूरतें ज़ाहिर कर सकते हैं। यह सब देखकर बच्चे मौखिक भाषा के बारे में कुछ मान्यताएँ और अवधारणाएँ बना लेते हैं।

  ऐसी ही अवधारणाएँ बच्चे पढ़ने-लिखने के बारे में भी बनाते हैं जब वे अपने आसपास के लोगों को पढ़ते-लिखते देखते हैं। इन्हीं में से एक अवधारणा का उदाहरण है-बिस्कुट के रैपर पर लिखे शब्दों को देख कर बच्चे पहचान लेते हैं कि बिस्कुट का नाम लिखा है। यह पहचान बच्चे अपने अनुभव और अनुमान के आधार पर करते हैं। बच्चे भले ही छपे हुए शब्द को अलग-अलग हिज्जे करके न बता सकें कि उसमें कौन-कौन से स्वर और व्यंजन हैं पर वे यह बात भली-भाँति जानते हैं कि किसी चीज़ के आवरण पर लिखे शब्द उसी चीज़ का नाम बताएँगे। जैसे किसी फ़िल्म के पोस्टर पर लिखे शब्द उस फ़िल्म का ही नाम बताते हैं। इस निष्कर्ष पर बच्चे तरह-तरह के अनुभवों से गुज़रकर पहुँचते हैं।

- भाषा नियमबद्ध होती है। बच्चों की भाषा इस बात का प्रमाण है कि वे इन **नियमों का प्रयोग** करते हैं भले ही वे इन नियमों को बता न पाएँ। यदि परिवेश में बोली जाने वाली भाषा सुनकर बच्चे बोलना सीख जाते हैं तो समृद्ध परिवेश मिलने पर बच्चे पढ़ना-लिखना भी सीख सकते हैं। लिखित भाषा का भरपूर परिवेश यदि स्कूल में बनाया जाए तो स्वत: ही पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास करने में बच्चों को सहायता मिलेगी।

© NCERT not to be republished

- पढ़ना और लिखना एक साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं। ये न केवल साथ-साथ विकसित होती हैं बल्कि एक-दूसरे के विकास में सहायक भी होती हैं। पढ़ने-लिखने के बारे में बात करते हुए इस बात पर बल देना ज़रूरी होगा कि बच्चे भाषा का इस्तेमाल सिर्फ़ पढ़ने-लिखने और बोलने के लिए ही न करें, बल्कि **तर्क** करने, **विश्लेषण** करने, **अनुमान** लगाने, अपनी भावनाओं और सोच को **अभिव्यक्त** करने और **कल्पना** करने आदि के लिए भी करें।
- इस पुस्तक में बाल-साहित्य भरपूर मात्रा में दिया गया है ताकि बच्चों का पढ़ने-लिखने के प्रति रुझान बढ़ सके। यह ज़रूरी है कि बच्चों के लिए चुनी गई कविताएँ मज़ेदार हों, लय और संगीत प्रधान हों, उनकी ज़िंदगी के अलग-अलग पहलुओं को छूती हों, रचनाओं की भाषा बनावटी न हो, बल्कि बच्चों की अपनी भाषा से मिलती-जुलती हो।
- कविताओं के समान ही **कहानियाँ** भी बच्चों को भाती हैं। किताब में दी गई कहानियों के अतिरिक्त पारंपरिक कहानियों जैसे पंचतंत्र, जातक कथाएँ, विक्रमादित्य की कहानियाँ आदि के साथ ही अलग-अलग देशों एवं क्षेत्रों की लोककथाएँ भी बच्चों को सुनाएँ। कहानी सुनते समय बच्चे अनुमान लगाते हैं कि आगे क्या होगा। अनुमान का सही सिद्ध होना बच्चों को आनंदित तो करता ही है, उनका विश्वास भी बढ़ाता है।
- **खेल** हमारी संस्कृति के अंग हैं। किताब की शुरुआत में ही दिया गया है खेलगीत – **हरा समंदर गोपी चंदर**। बच्चों से गाकर इसे खेलने के लिए कहें। खेल के दौरान बच्चे भाषा का इस्तेमाल करते हैं। खेल समय की बर्बादी नहीं बल्कि भाषा को विस्तार देते हैं।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में प्रयोग करने की संस्तुति करती है। विद्यालय में बच्चों को अपने घर की बोली में बोलने के प्रचुर अवसर दें। कक्षा में भी पाठों में आए स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा के शब्दों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। दैनिक जीवन में लोग तरह-तरह के क्षेत्रों में काम करते हैं, इन कार्यक्षेत्रों की अपनी शब्दावली है। इन पर बच्चों को बातचीत के अवसर दें। ऐसे मौके **शब्द-भंडार** की वृद्धि में सहायक होते हैं।
- **कलाओं** एवं **लोककलाओं** से रची-बसी है हमारी संस्कृति। किताब में कला संबंधी अनेक गतिविधियाँ हैं। नाटक, संगीत, कला में बच्चों को रस तो मिलता ही है, इनसे बच्चों की भाषा भी समृद्ध होती है। लोकजीवन में पहले से स्थापित लोककलाओं को भी किताब में स्थान दिया गया है। किताब में दिए कुछ चित्र मधुबनी (बिहार), वरली (महाराष्ट्र), पट्ट चित्र (उड़ीसा) शैलियों के हैं। इनकी ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें और अपने इलाके की लोककला शैली के कलाकारों को स्कूल में आमंत्रित करके उनसे कुछ सीखने का मौका बच्चों को दें।
- चित्र शब्द-भंडार की वृद्धि, कल्पना, तर्क, कौशल तथा अभिव्यक्ति के विकास में सहायक होते हैं। भाषा सीखने की प्रक्रिया में चित्रों की विशेष भूमिका होती है। चित्र बनाना बच्चों के लिए लिखना सीखने और अर्थ समझने का एक शुरुआती दौर है। चित्रों से जुड़े सवालों के ज़रिए

© NCERT not to be republished

बच्चों में चीज़ों को बारीकी से देखने और उन पर विस्तृत प्रतिक्रिया देने की आदत विकसित होती है।

चित्रों से पगी इस किताब में बच्चों को भी चित्र बनाने के कई मौके मिले हैं, ताकि उनके लेखन और चित्रकारी में सुघड़ता आ सके और उनमें रचनात्मकता एवं सौंदर्यबोध का विकास हो। कविता-कहानी पढ़ाने के बाद चित्रों के बारे में बच्चों से बातचीत करें। किताब में विषय सामग्री एवं चित्रों के माध्यम से बच्चों में संवेदनशीलता भी विकसित की जा सकती है। कक्षा के दृश्य के चित्र पर बच्चों से बातचीत करते समय विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की क्षमताओं और कठिनाइयों से उन्हें अवगत कराएँ तथा इनके प्रति समानता और स्नेह की भावना बच्चों में जगाएँ। आपकी कक्षा में यदि ऐसे बच्चे हैं तो उनमें निहित क्षमताओं को परस्पर सहयोग से उभारें तथा उनकी सराहना करें।

इस किताब को पढ़ते वक्त आप सभी के ज़हन में यह सवाल उठेगा कि इस किताब से बच्चे मात्राएँ कैसे सीखेंगे। यह ज़रूरी नहीं है कि बच्चे सारे अक्षर जानने के बाद ही मात्रा पहचान पाएँगे या इस्तेमाल कर पाएँगे। सार्थक संदर्भ में किसी भी प्रकार की लिखित सामग्री बार-बार देखने के बाद बच्चे मात्रा की ओर बढ़ सकते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि तब तक बच्चे पढ़ेंगे कैसे, लिखेंगे कैसे? इसका जवाब यह है कि बच्चे आपकी मदद से, चित्रों से मिल रहे संकेतों को इस्तेमाल करते हुए और अनुमान लगाते हुए पढ़ेंगे और यह प्रक्रिया लंबी भी हो सकती है। बच्चों को लिखित और मुद्रित सामग्री से भरपूर परिवेश कितना उपलब्ध हो पाता है यह इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चों के लिए शब्द एक चित्र ही है। जिस प्रकार बच्चे चित्र को एक बार देखकर पहचान लेते हैं तथा उसका एक रूप मानस में गढ़ लेते हैं उसी प्रकार किसी शब्द को देखकर भी वे मात्राओं की तस्वीर मन-मस्तिष्क में बैठा लेते हैं। इस बीच आप पाएँगे कि बच्चे अपने बनाए नियमों के अनुसार शब्दों/वर्तनी को गढ़ते हैं। बच्चों को सुधारने की जल्दी न करें और उन्हें सही वर्तनी पर पहुँचने का पर्याप्त समय और आज़ादी दें।

मसलन, आपकी कक्षा में 'झूला' कविता का आनंद लिया जा रहा है। आप न, म, अ, ठ, ए अक्षरों के बारे में कुछ बातचीत कर चुके हैं। झूला अपने आप में बात करने के लिए बहुत ही मज़ेदार विषय है। बच्चों का ध्यान पिछले पन्नों पर दिए गए शब्दों, जैसे- स्कूल, अँगूठा आदि पर दिलवाएँ। साथ ही उनसे 'ऊ' की ध्वनि वाले शब्द बोलने के लिए कहें जिन्हें आप श्यामपट्ट या चार्ट पेपर आदि पर लिख सकते हैं। अब आप उनका ध्यान इन लिखे हुए शब्दों और इनकी ध्वनियों पर दिलवाएँ। यकीनन वे 'ू' का संबंध इसकी ध्वनि से जोड़ पाएँगे। पहचानने और बोलने दोनों में, बच्चे पिछले पन्नों पर जाकर स्कूल, अँगूठा जैसे शब्दों पर गौर कर सकते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 भाषा-शिक्षण के संदर्भ में समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाने की संस्तुति करती है। इसलिए रिमझिम में लेखन कौशल को अलग से न लेकर विभिन्न भाषायी कौशलों के अभिन्न अंग के रूप में लिया गया है। लेखन की सामान्य रूप

2022-23

से समझी जाने वाली गतिविधियों से पहले बच्चों को स्वयं को अभिव्यक्त करने की अनेक प्रकार की गतिविधियाँ दी गई हैं, जैसे–अँगूठे की छाप से चित्र बनाना, अक्षर और संख्याओं से चित्र बनाना आदि। जिस तरह शब्द और वाक्य अभिव्यक्ति के तरीके हैं उसी प्रकार रंग भरना और चित्र बनाना भी। जिन बातों को बच्चे पहले से जानते और समझते हैं उन बातों को वे सहजता से लिख सकते हैं। इसलिए किसी भी लेखन कार्य से पहले उस पर बातचीत करने की गतिविधियाँ रिमझिम में पर्याप्त मात्रा में दी गई हैं। रिमझिम में इस बात पर बल दिया गया है कि बच्चे अपने मन की बात खुल कर लिख सकें। इसके साथ ही लेखन द्वारा पहचान, वर्गीकरण, सूची बनाना, मिलाना, बढ़ाना आदि क्रियाकलाप दिए गए हैं ताकि बच्चों में खेल ही खेल में लेखन कौशल का विकास हो।

- पाठों के अंत में **अभ्यास एवं गतिविधियाँ** देने का उद्देश्य बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना एवं उनकी भाषा का विस्तार करना है। ऐसे अभ्यास और गतिविधियाँ भी आप सोचकर करवाएँ और बच्चों की मदद करें।
- गतिविधियों से भरपूर इस किताब में हर गतिविधि के शीर्षक के साथ चूहा नज़र आता है। **नटखट चूहा** बच्चों को कुछ–न–कुछ करने को कहता है। किताब में **सुहानी बिल्ली** बार–बार आई है। बच्चों से बातें करती हुई सुहानी उन्हें गतिविधि एवं अभ्यास करने के लिए प्रेरित करती है। सुहानी से बच्चों का एक मीठा रिश्ता बन जाता है। वे किताब खोलते ही उसे ढूँढ़ते हैं और सारी घटनाएँ बार–बार याद करके खुश होते हैं।
- रिमझिम के पठन–पाठन को लेकर उपजे सवालों का जवाब देने के लिए परिषद् द्वारा शिक्षक संदर्शिकाएँ विकसित की गई हैं– 'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम भाग–1' तथा 'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम भाग–2'। रिमझिम पढ़ाने में ये संदर्शिकाएँ शिक्षक साथियों की मदद करेंगी।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 कक्षा–1 और 2 के लिए भाषा तथा गणित के माध्यम से पर्यावरण अध्ययन तथा कला शिक्षा को पढ़ाने की संस्तुति करती है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए परिषद् द्वारा एक ट्रेनिंग मॉड्यूल विकसित किया गया है– Skills in Environmental Studies Through Language and Maths in Early Grades—A Training Module.
- ट्रेनिंग मॉड्यूल तथा शिक्षक संदर्शिका 'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम भाग–1 और भाग–2' परिषद् के प्रकाशन विभाग से प्राप्त किए जा सकते हैं।

© NCERT not to be republished

आभार

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए प्रोफ़ेसर कृष्ण कांत वशिष्ठ, *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी के प्रति हम विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने हर संभव सहयोग दिया।

परिषद उन समस्त रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली (आम की कहानी); निदेशक, उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ (बंदर गया खेत में भाग एवं भगदड़); प्रकाशक, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली (गेंद-बल्ला); प्रकाशक, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली; प्रकाशक राजपाल एंड संस, दिल्ली (चूहो! म्याऊँ सो रही है); मुख्य संपादक, रत्नासागर प्रकाशन, दिल्ली (लालू और पीलू); प्रकाशक, सफ़दर हाश्मी मेमोरियल ट्रस्ट, नई दिल्ली; प्रकाशक, संस्था प्रथम, दिल्ली (बंदर और गिलहरी); प्रकाशक, एकलव्य, भोपाल (पत्ते ही पत्ते, मैं भी एवं हलीम चला चाँद पर); विभा सक्सेना, दिल्ली (पकौड़ी); पूनम सेवक, बरेली (एक बुढ़िया एवं चार चने); रोहिताश्व अस्थाना, हरदोई (झूला) के हम आभारी हैं।

निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली एवं संग्रहालयाध्यक्ष, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्रति भी हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, जिन्होंने अपनी संस्था के पुस्तकालय के उपयोग की हमें सहर्ष अनुमति दी।

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए आरती गौनियाल, *सहायक शिक्षिका*, सर्वोदय विद्यालय, कैलाश एन्कलेव, सरस्वती विहार, नई दिल्ली; उषा द्विवेदी, *मुख्य अध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; योगिता शर्मा, *सहायक शिक्षिका*, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, मधु विहार, नई दिल्ली; रीता भगत, *शिक्षिका*, केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर 4, आर.के. पुरम, नई दिल्ली; श्रीप्रसाद, *बाल साहित्यकार*, वाराणसी के हम आभारी हैं।

मुख्य अध्यापक, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, कापसहेड़ा, समालखा एवं बिजवासिन ने हमें अपने विद्यालयों में बच्चों तथा शिक्षकों से किताब के संबंध में बातें करने का अवसर दिया, इसके लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए सीमा मेहमी, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; उत्तम कुमार, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; रेखा सिन्हा, *प्रूफ़ रीडर*; राधा, *कॉपी एडीटर*; सुशीला शर्मा एवं निर्मल मेहता, *सहायक कार्यक्रम समन्वयक*; शाकम्बर दत्त, *इंचार्ज*, कंप्यूटर कक्ष, ओमप्रकाश ध्यानी, अशोक एवं मनोहरलाल, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., आर.सी.दास, *फोटोग्राफ़र*, सी.आई.ई.टी. के भी हम आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं, इसके लिए हम आभारी हैं।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, प्राथमिक पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

अनीता रामपाल, *प्रोफ़ेसर,* केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय।

मुख्य सलाहकार

मुकुल प्रियदर्शिनी, *प्राध्यापिका,* लेडी श्रीराम कॉलेज, नई दिल्ली।

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *शिक्षक,* नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली।

कृष्ण कुमार, *प्रोफ़ेसर एवं निदेशक,* एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

मंजुला माथुर, *प्रवाचक,* सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

मालविका राय, *शिक्षिका,* हैरीटेज़ स्कूल, डी-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली।

सोनिका कौशिक, *प्रवक्ता,* जीसस एंड मेरी कॉलेज, नई दिल्ली।

सदस्य एवं समन्वयक

लता पाण्डे, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

© NCERT not to be republished

कहाँ क्या है?

आमुख iii

बड़ों से दो बातें v

1. झूला 10

2. आम की कहानी 18

3. पत्ते ही पत्ते 25

4. पकौड़ी 42

5. रसोईघर 56

6. चूहो! म्याऊँ सो रही है 62

* *मकड़ी-ककड़ी-लकड़ी* 66

© NCERT not to be republished

* तारांकित रचनाएँ केवल पढ़ने के लिए हैं।

7. बंदर और गिलहरी 68
8. पतंग 74
9. गेंद-बल्ला 78

10. बंदर गया खेत में भाग 81
11. एक बुढ़िया 85
12. मैं भी... 87

13. लालू और पीलू 91
14. चकई के चकदुम 94
15. छोटी का कमाल 98

© NCERT not to be republished

16. चार चने 100
17. भगदड़ 102

18. हलीम चला चाँद पर 105
19. हाथी चल्लम चल्लम 110

वर्णमाला 113
* पुराने बच्चे 114
रचनाकार-जिनकी कविता और कहानियाँ हमने पढ़ीं 115

© NCERT not to be republished

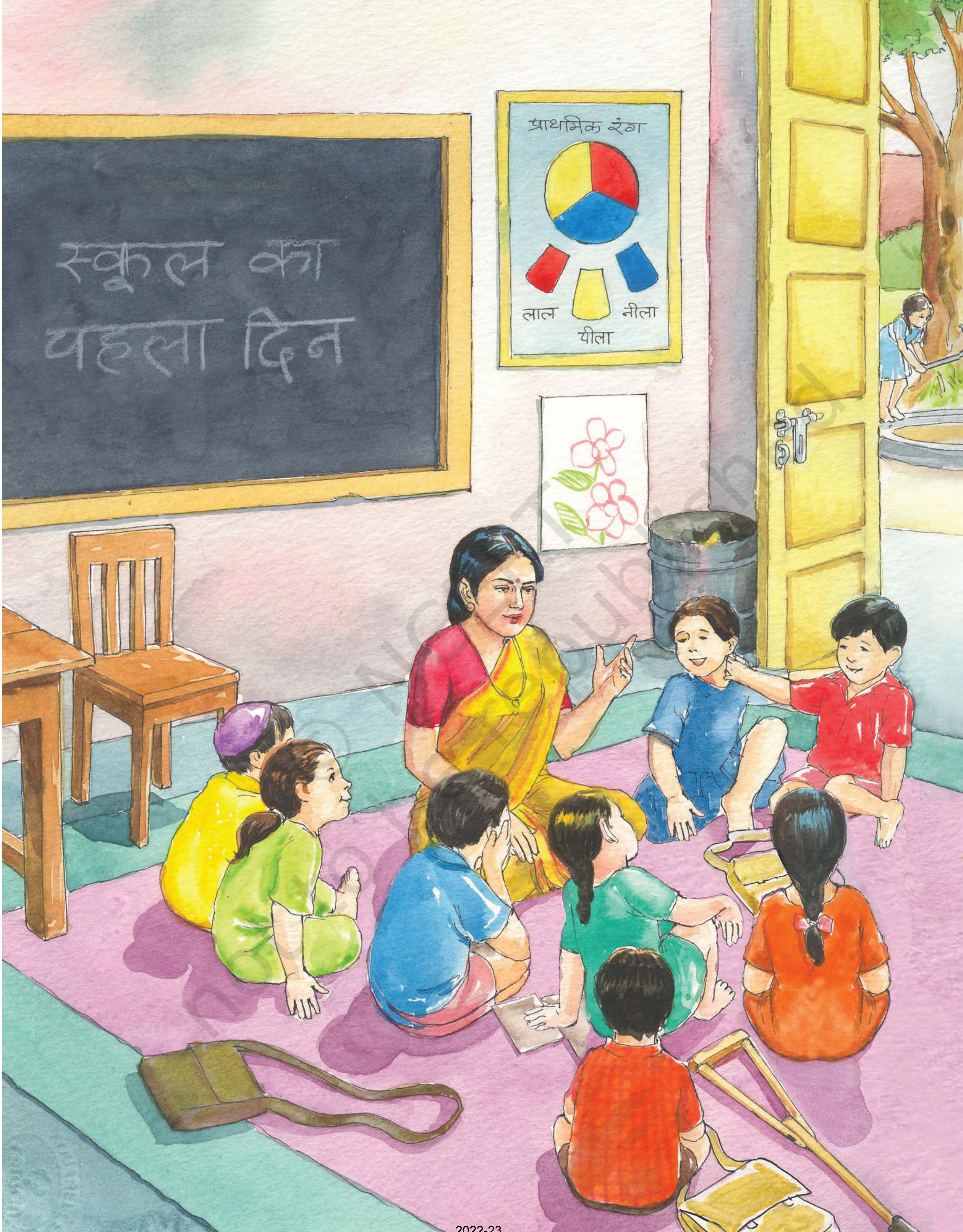
स्कूल का
पहला दिन
प्राथमिक रंग
लाल
पीला
नीला

अक्कड़-बक्कड़
बंबे बो,
अस्सी नब्बे
पूरे सौ.
सौ में लगा धागा
चोर,
निकलकर भागा
केला
संतरा
अंगूर

नाम ही नाम

मेरा नाम .... है।

मेरे शिक्षक/शिक्षिका का नाम .... है।

उन चीज़ों के चित्र बनाओ जो तुम्हारी कक्षा में हैं। जैसे –

अब पिछले पन्ने पर जाओ।
देखो, वहाँ क्या मिला, क्या नहीं मिला।

© NCERT not to be republished

यहाँ दो टोलियाँ हैं।
एक ऐसी टोली जिसके नामों में **म** आता है।
दूसरी ऐसी टोली जिसके नामों में **न** आता है।

बच्चों को सही टोलियों तक पहुँचाओ, जैसा कि नीचे दिखाया गया है।

न की टोली

हेमा मानू राजन नूनू

म की टोली

स्वामी नीलू माधवन नीरजा

उमर धना मुरुगन हमीदा मोहित

अब तुम भी कक्षा में झटपट ऐसी टोलियाँ बनाओ।

अँगूठे की छाप

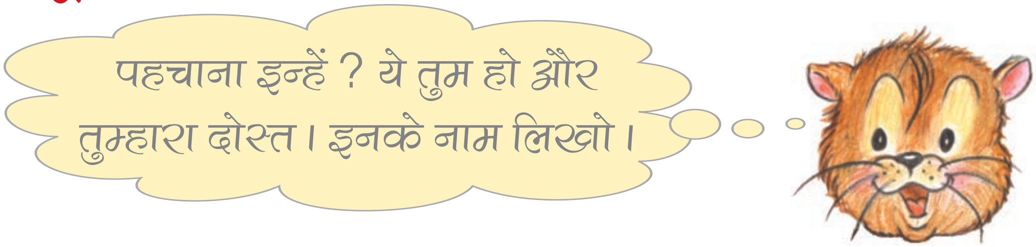

....

अँगूठे के अंदर
छिपा एक बंदर
उसका एक साथी
मोटा एक हाथी

पहचानो, अँगूठे की इन छापों में और क्या-क्या छिपा है?

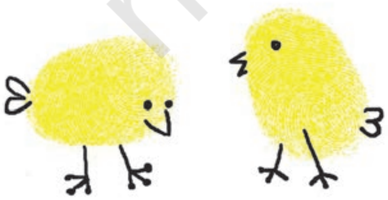

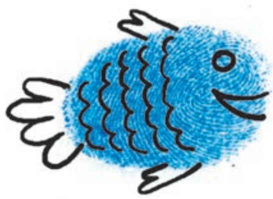

© NCERT not to be republished

अब इन अँगूठों की छाप में तुम भी कुछ जोड़ो।

आठ

कठपुतली

गठरी

चिड़िया

अनार

अपने अँगूठे की छाप से कुछ और बनाओ।

© NCERT not to be republished

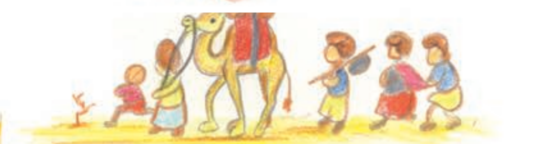

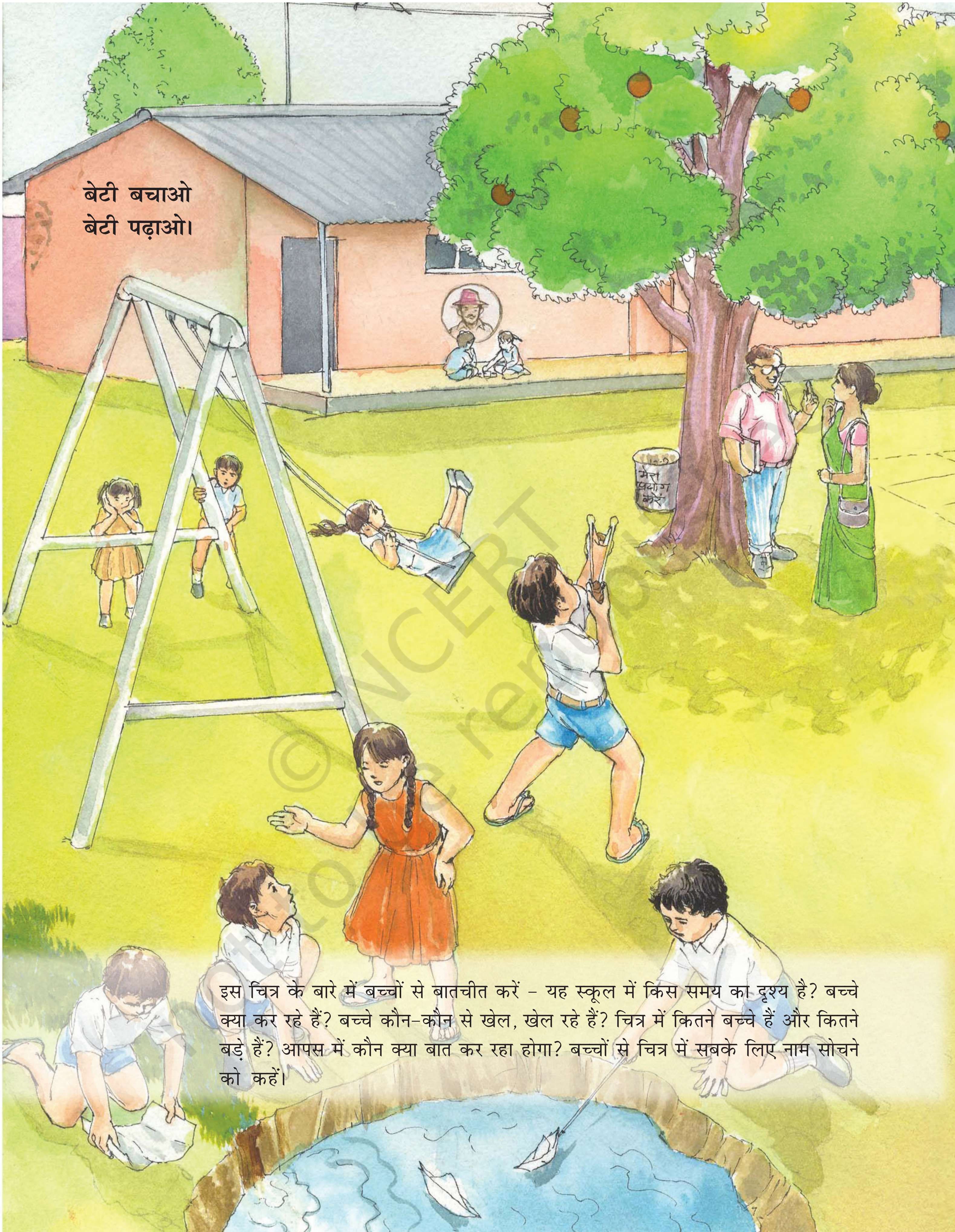

इस चित्र के बारे में बच्चों से बातचीत करें – यह स्कूल में किस समय का दृश्य है? बच्चे क्या कर रहे हैं? बच्चे कौन-कौन से खेल, खेल रहे हैं? चित्र में कितने बच्चे हैं और कितने बड़े हैं? आपस में कौन क्या बात कर रहा होगा? बच्चों से चित्र में सबके लिए नाम सोचने को कहें।

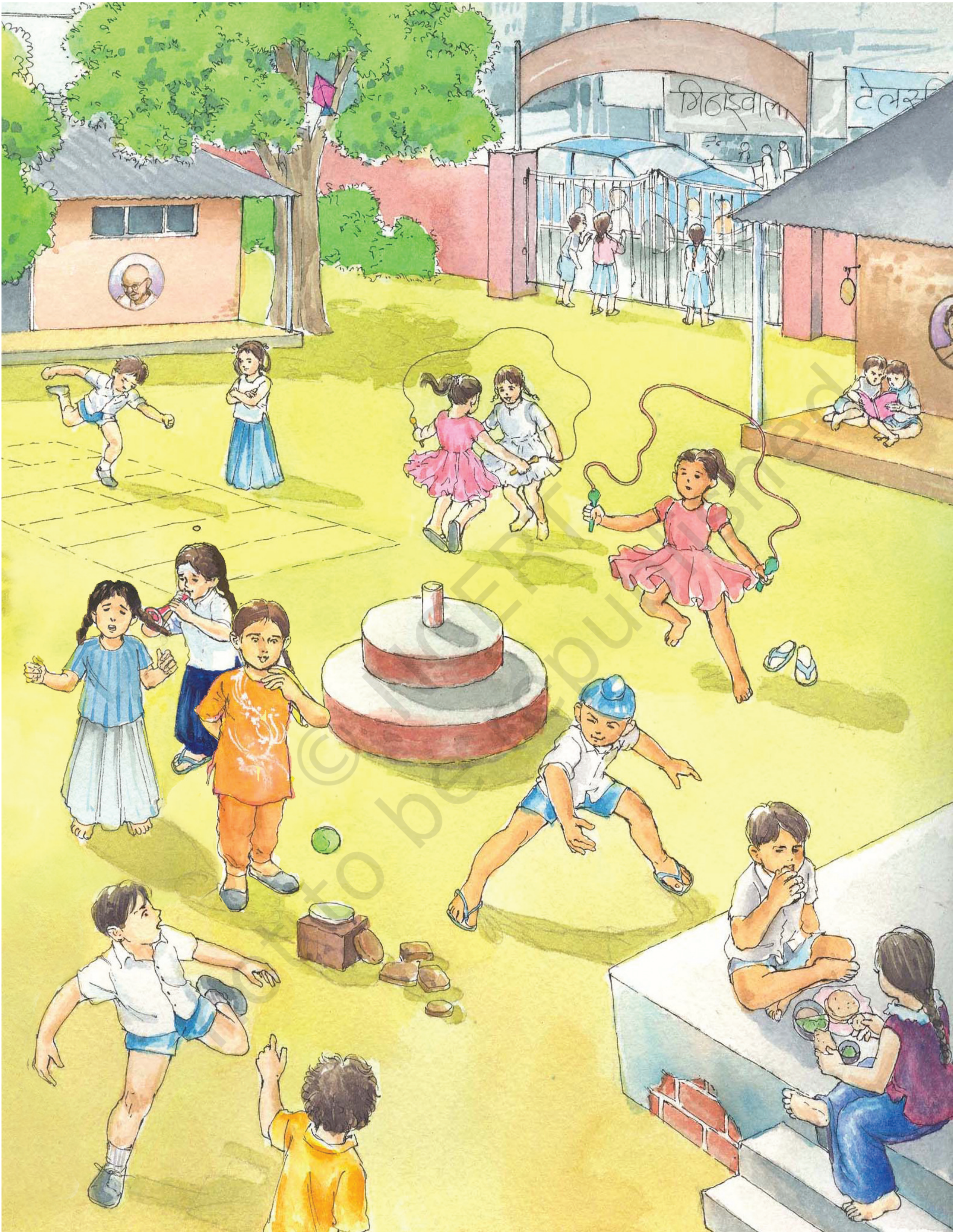

© NCERT not to be republished

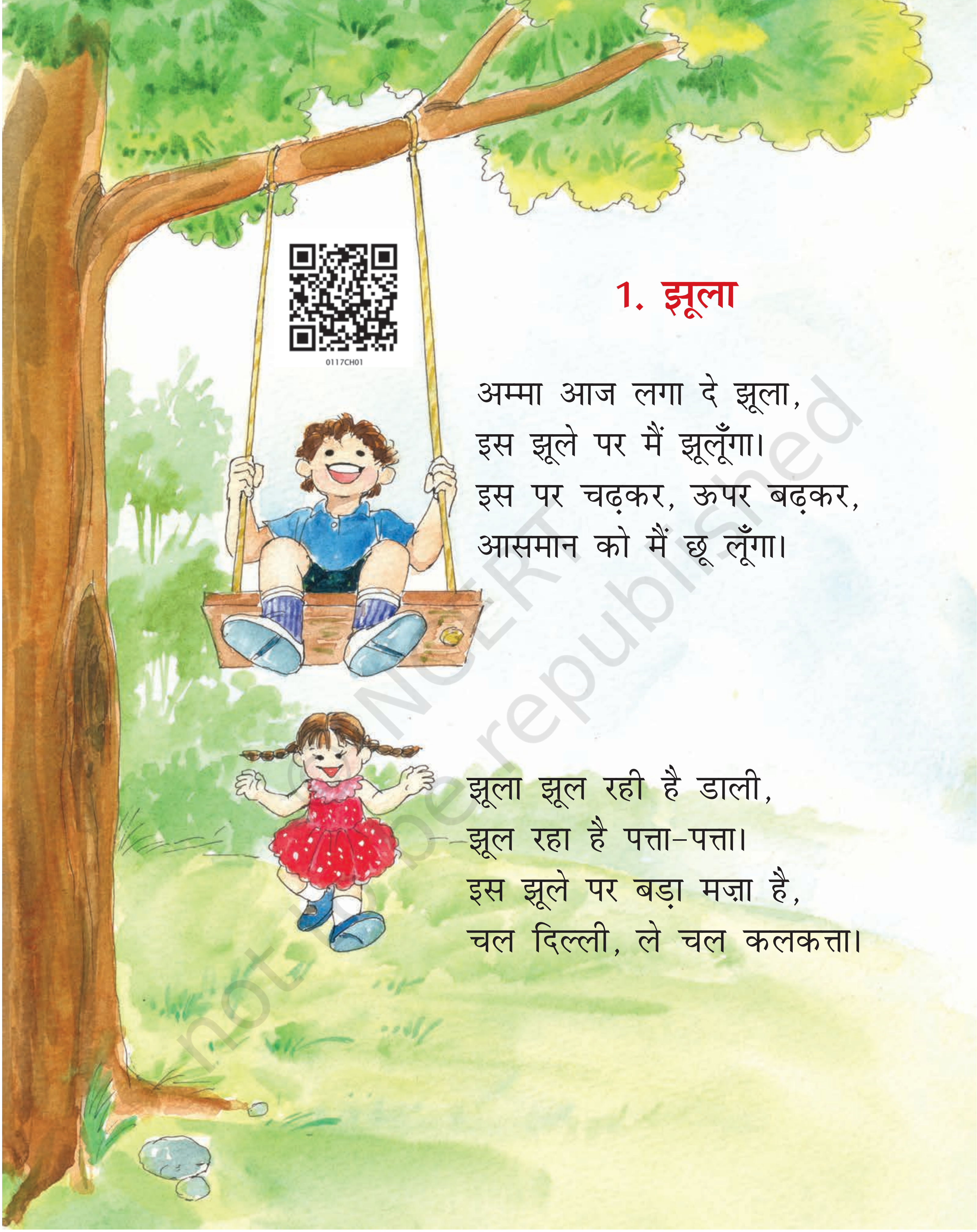

0117CH01

1. झूला

अम्मा आज लगा दे झूला,
इस झूले पर मैं झूलूँगा।
इस पर चढ़कर, ऊपर बढ़कर,
आसमान को मैं छू लूँगा।

झूला झूल रही है डाली,
झूल रहा है पत्ता-पत्ता।
इस झूले पर बड़ा मज़ा है,
चल दिल्ली, ले चल कलकत्ता।

© NCERT not to be republished

झूल रही नीचे की धरती,
उड़ चल, उड़ चल,
उड़ चल, उड़ चल।
बरस रहा है रिमझिम, रिमझिम,
उड़कर मैं लूटूँ दल-बादल।

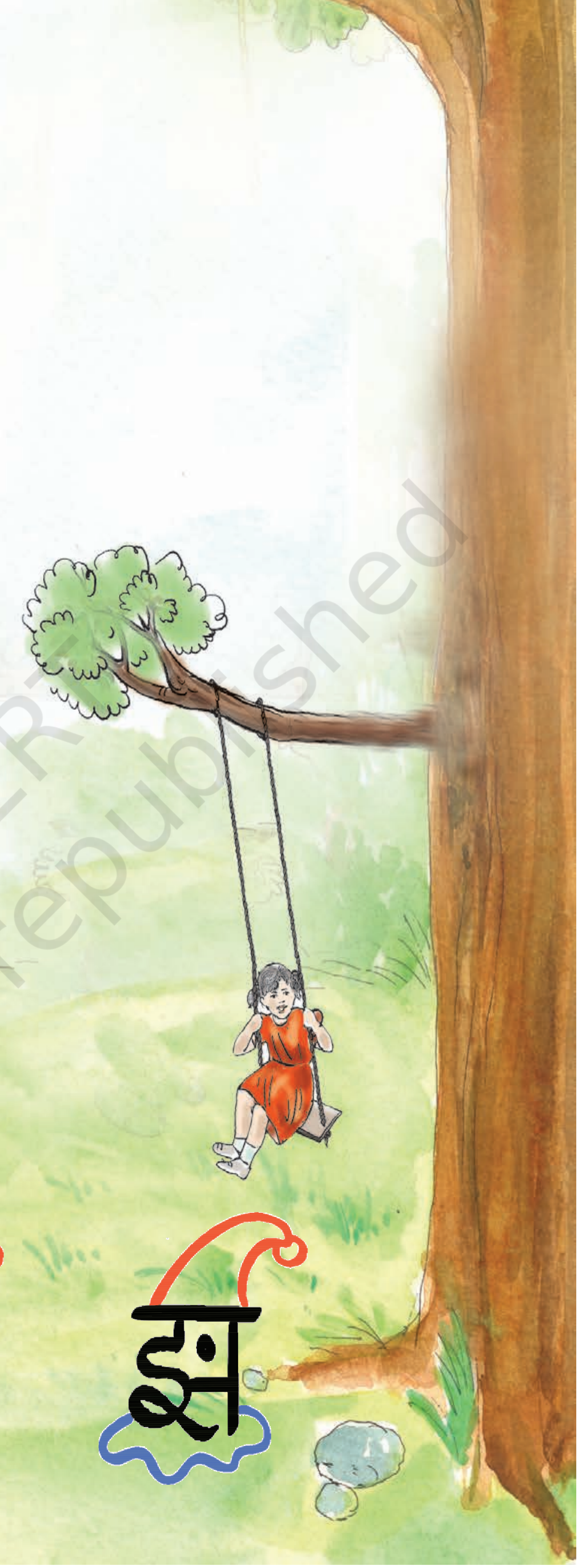

झ झ झ

© NCERT not to be republished

झ ल ड

झूले ही झूले

बताओ, इनमें किन चीज़ों पर तुम झूले की तरह झूल सकते हो?

टायर

फाटक

झाड़ू

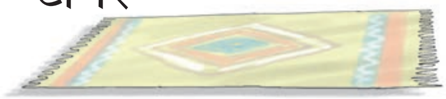

दरी

डाली

मेज़

पैर वाला झूला

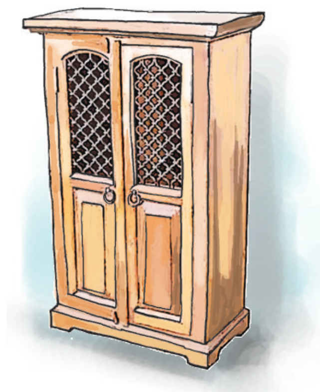

अलमारी

मुझे .... पर झूलने में मज़ा आता है।

मुझे .... पर झूलने में डर लगता है।

मुझे .... पर झूलने पर डाँट पड़ती है।

© NCERT not to be republished

तुम इन झूलों पर भी झूले होगे। इन झूलों को तुमने कहाँ–कहाँ देखा है?

मेला स्कूल पार्क

घर का आँगन बगीचा

......

....

....

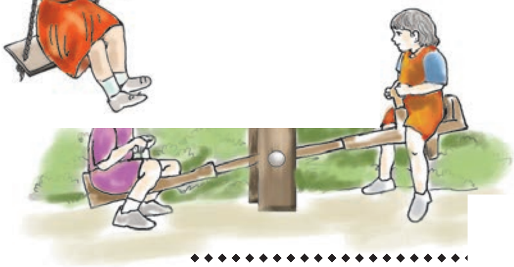

....

....

....

झूले से सुहानी को क्या–क्या दिख रहा होगा?

© NCERT not to be republished

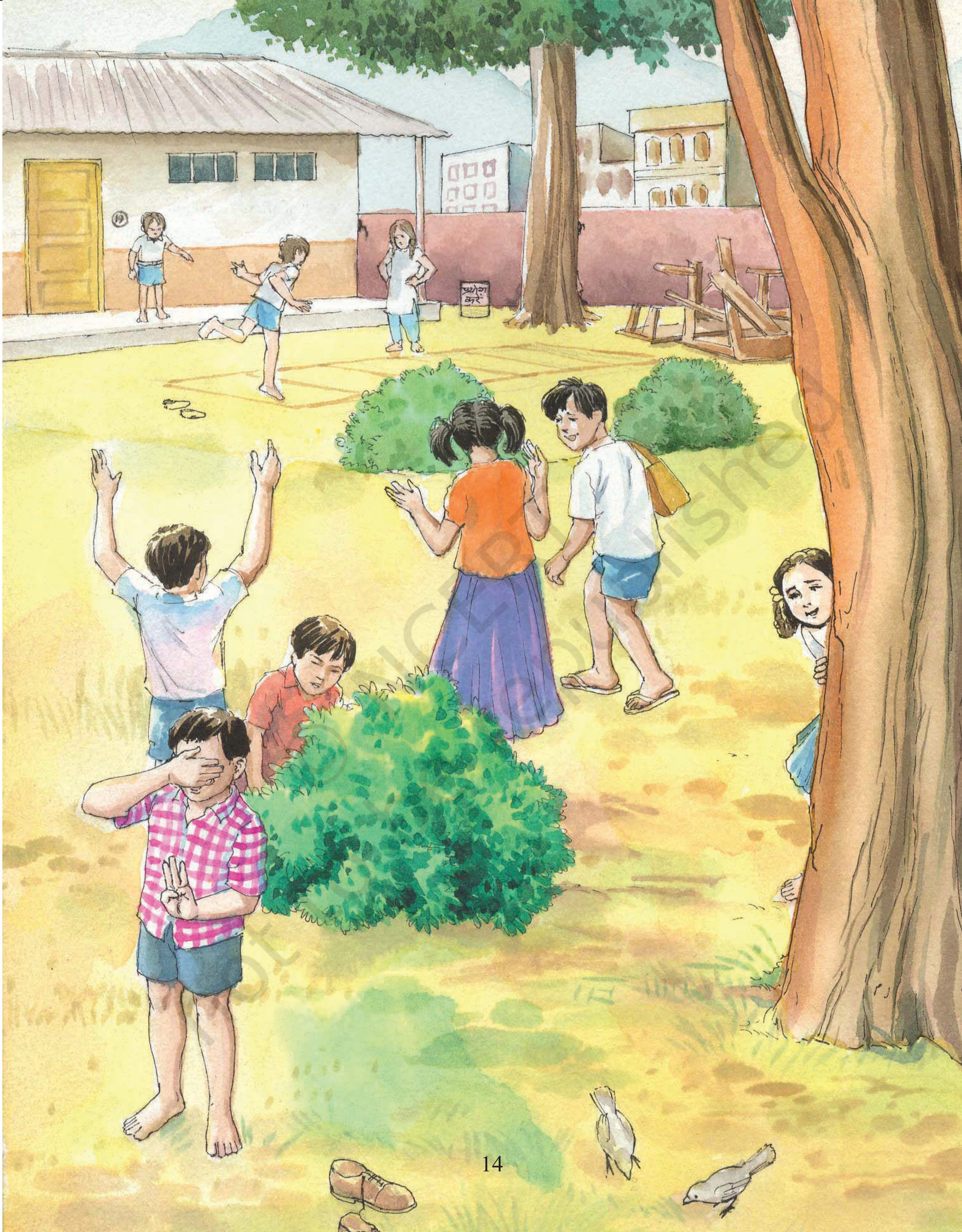

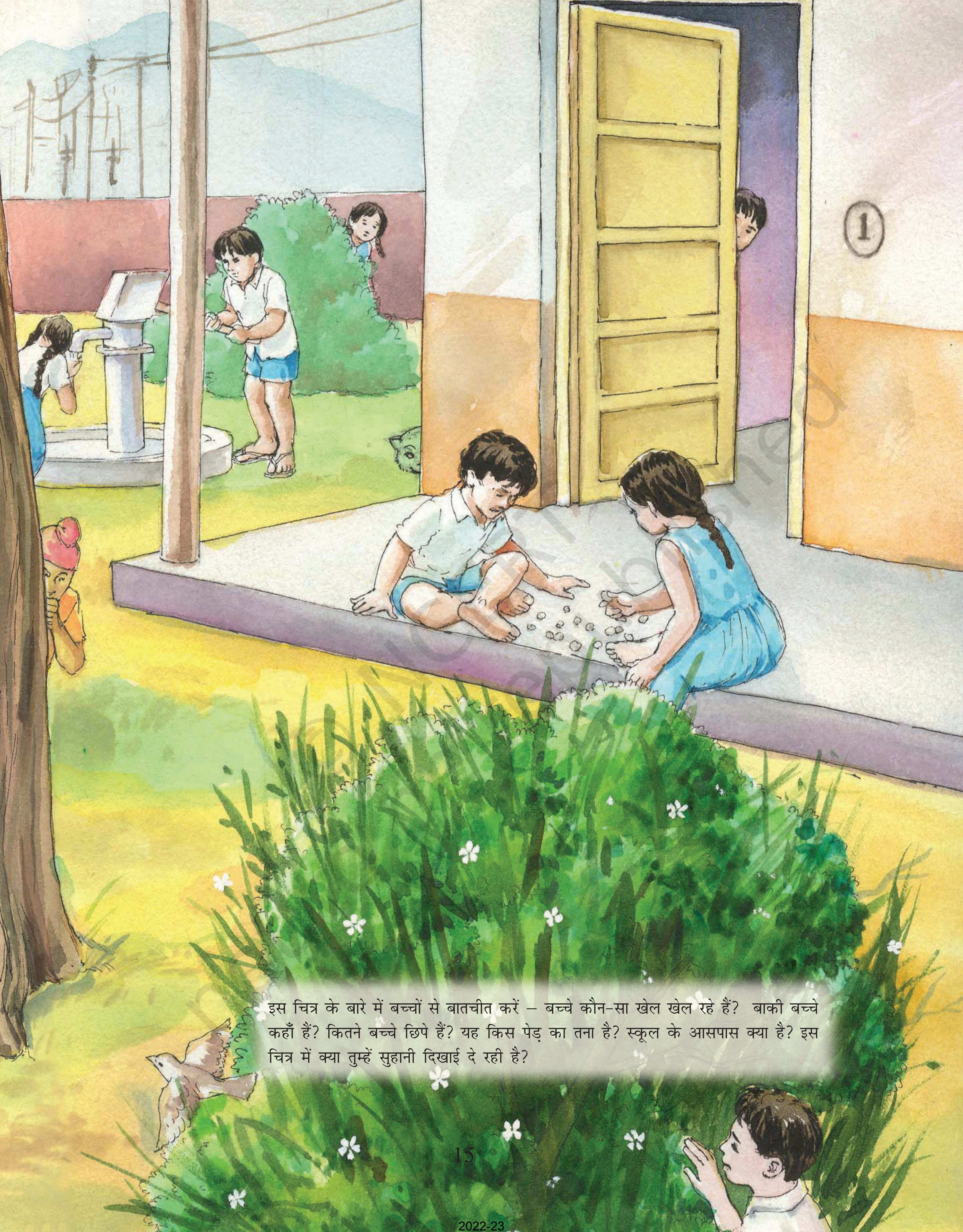

इस चित्र के बारे में बच्चों से बातचीत करें – बच्चे कौन-सा खेल खेल रहे हैं? बाकी बच्चे कहाँ हैं? कितने बच्चे छिपे हैं? यह किस पेड़ का तना है? स्कूल के आसपास क्या है? इस चित्र में क्या तुम्हें सुहानी दिखाई दे रही है?

मिलाओ

ठेला

झूला

पेड़

गठरी

खाली जगह भरो और फिर छुपने की इन जगहों पर बच्चों के चित्र बनाओ।

……पेड़…… के पीछे

……………… के नीचे

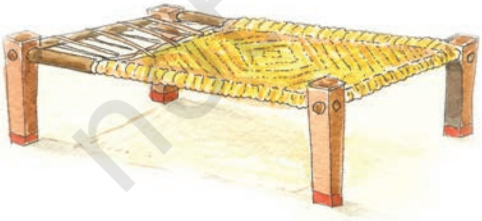

……………… के नीचे

……………… के पीछे

© NCERT not to be republished

पकड़न - पकड़ाई

छ ई

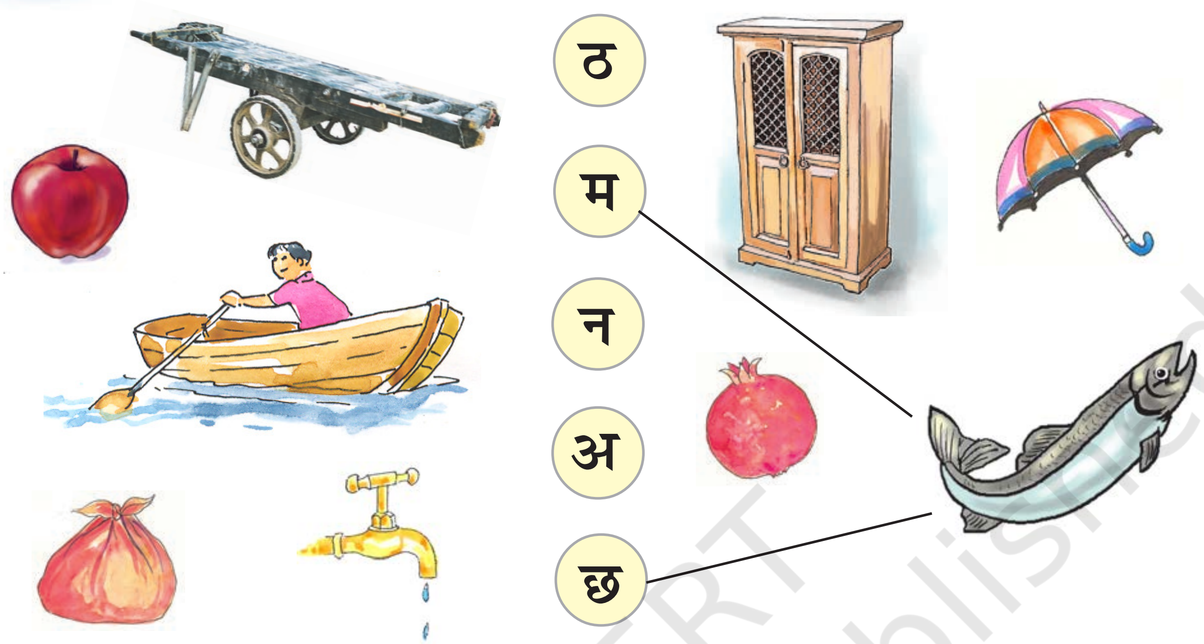

ऊपर बनी चीज़ों के नाम उन अक्षरों के नीचे लिखो जो उनमें आते हैं।

ठ	छ	म	अ	न
	मछली	मछली		

यहाँ मछली **दो बार लिखा गया है। क्या किसी और चीज़ का नाम भी तुमने दो बार लिखा है?**

....

© NCERT not to be republished

2. आम की कहानी

आ क

एक चित्रकथा।

© NCERT not to be republished

2022-23

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

लिखो, कहानी में पहले क्या आया?

1. .... लड़की ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....
6. ....

कौन कहाँ

1. .... के हाथ में
2. .... के ऊपर

3. .... में
4. पेड़ के ....

5. .... के सिर पर

© NCERT not to be republished

कहो कहानी

1. 'आम की कहानी' को अपनी भाषा में सुनाओ।
2. अगर माली काका जग जाते तो कहानी में आगे क्या होता? अपने तरीके से कहानी को आगे बढ़ाओ।

घेरे में

आ

जिन चीज़ों के नाम में 'आ' की आवाज़ है, उन पर घेरा लगाओ –

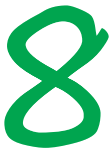

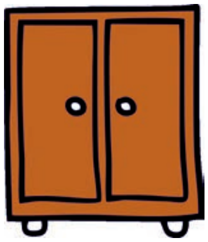

क

जिन चीज़ों के नाम में 'क' की आवाज़ है, उन पर घेरा लगाओ –

© NCERT not to be republished

मिलाओ

आदमी

कटहल

कौआ

आम

नाम बताओ

इन सभी को अपनी पसंद के नाम दो–

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

0117CH03

3. पत्ते ही पत्ते

त प ऐ

दीदी बोली –
मैं पाँच तक गिनूँगी।
गिनती शुरू करने से पहले
तुम लोग गोला बनाकर
बैठ जाओ।
एक... दो... तीन... चार...।

पाँच बोलने से पहले ही
मैं दौड़ी और

© NCERT not to be republished

धड़ाम से बैठ गई।
उधर दीदी ने गिनती पूरी
की और इधर हम सब गोला
बनाकर बैठ गए।

© NCERT not to be republished

आज दीदी पत्ते लेकर आई थीं।

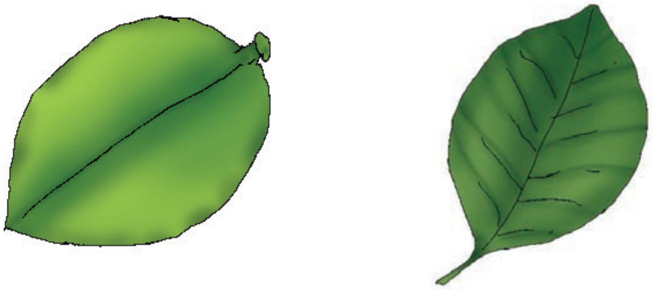

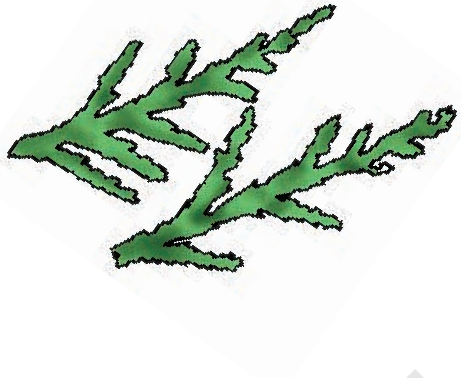

कितने सारे पत्ते
तरह–तरह के पत्ते।

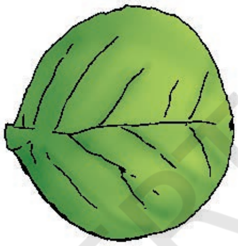

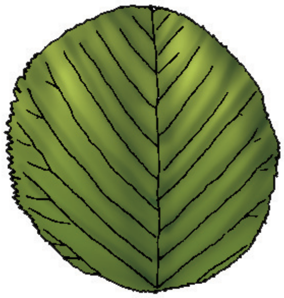

हमने पत्तों को अच्छे से देखा।
कुछ पत्ते लंबे थे...
तो कुछ गोल थे।
एकदम गोल...
कुछ छोटे...
कुछ बड़े...

© NCERT not to be republished

एक था लाल।

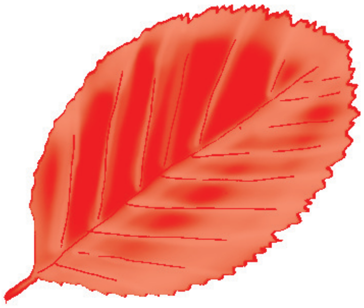

एक पत्ता पीला और
कत्थई रंग का था।

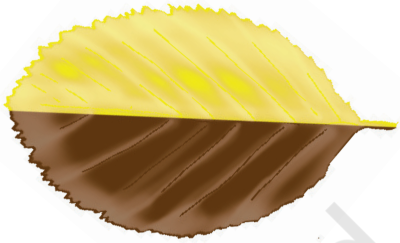

एक पत्ते पर नसें
दिख रही थीं।

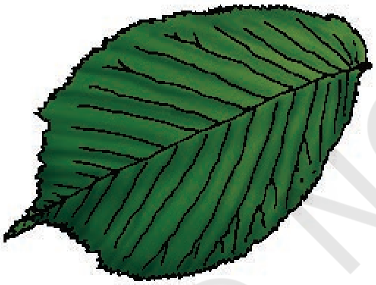

एक पत्ता कतरीला था।

एक पत्ते का डंठल
एकदम सीधा था।

एक पत्ता झालर वाला था।

© NCERT not to be republished

हमने पत्तों को
छूकर देखा।

कोई पत्ता एक तरफ़
से मुलायम था

तो दूसरी तरफ़
से खुरदरा।

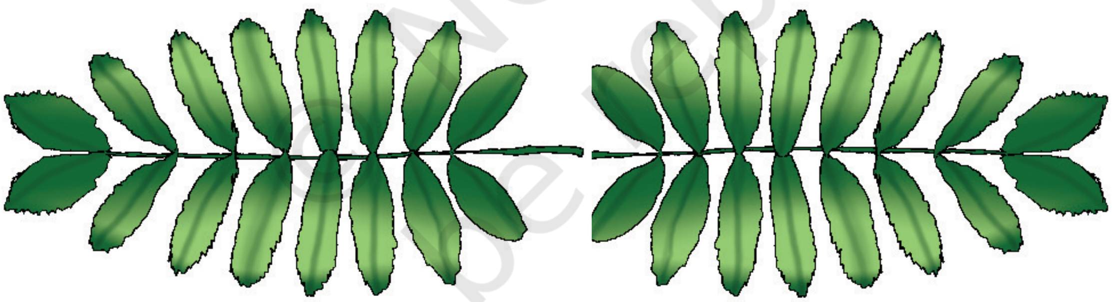

तो कुछ पत्ते बंदनवार
जैसे लग रहे थे।

अब करने की बारी

बगीचे में जाओ। पत्ते देखो। उन्हें हल्के से हाथ लगाओ। कैसा लगा? आपस में बातें करो।

अपने आसपास से तरह-तरह की पत्तियाँ इकट्ठी करो। इन पत्तियों को कागज़ पर चिपकाओ। नीचे दी गई जगह पर पत्तियों के चित्र भी बनाओ।

© NCERT not to be republished

- बच्चों से तरह-तरह के पत्ते इकट्ठा करने और चिपकाने को कहें। उनसे एक-दूसरे के लाए पत्ते देखने को कहें। पत्ते कहाँ से लाए गए, किसके पत्ते मिलते-जुलते हैं – इस पर बातचीत करें।

पत्ते का पटाखा

सामान

एक पत्ता

बनाने का तरीका

- एक पत्ते को अपने हाथ की थोड़ी खुली मुट्ठी पर रखो।

- अब दूसरी हथेली से कसकर पत्ते पर वार करो।
- तुम्हें एक गुब्बारे के फटने जैसी आवाज़ सुनाई देगी।

जानो

- पत्ते को मारने की बजाय उसमें अपनी उँगली घुसाकर छेद बना दो। अब हाथ से वार करो। क्या पटाखे जैसी आवाज़ आई?

© NCERT not to be republished

बच्चों से बातचीत करें– इस समय स्कूल में क्या हो रहा है? बच्चे क्या-क्या कर रहे हैं? स्कूल के बाहर कौन-कौन सी गाड़ियाँ हैं? बच्चे घर कैसे जा रहे हैं?

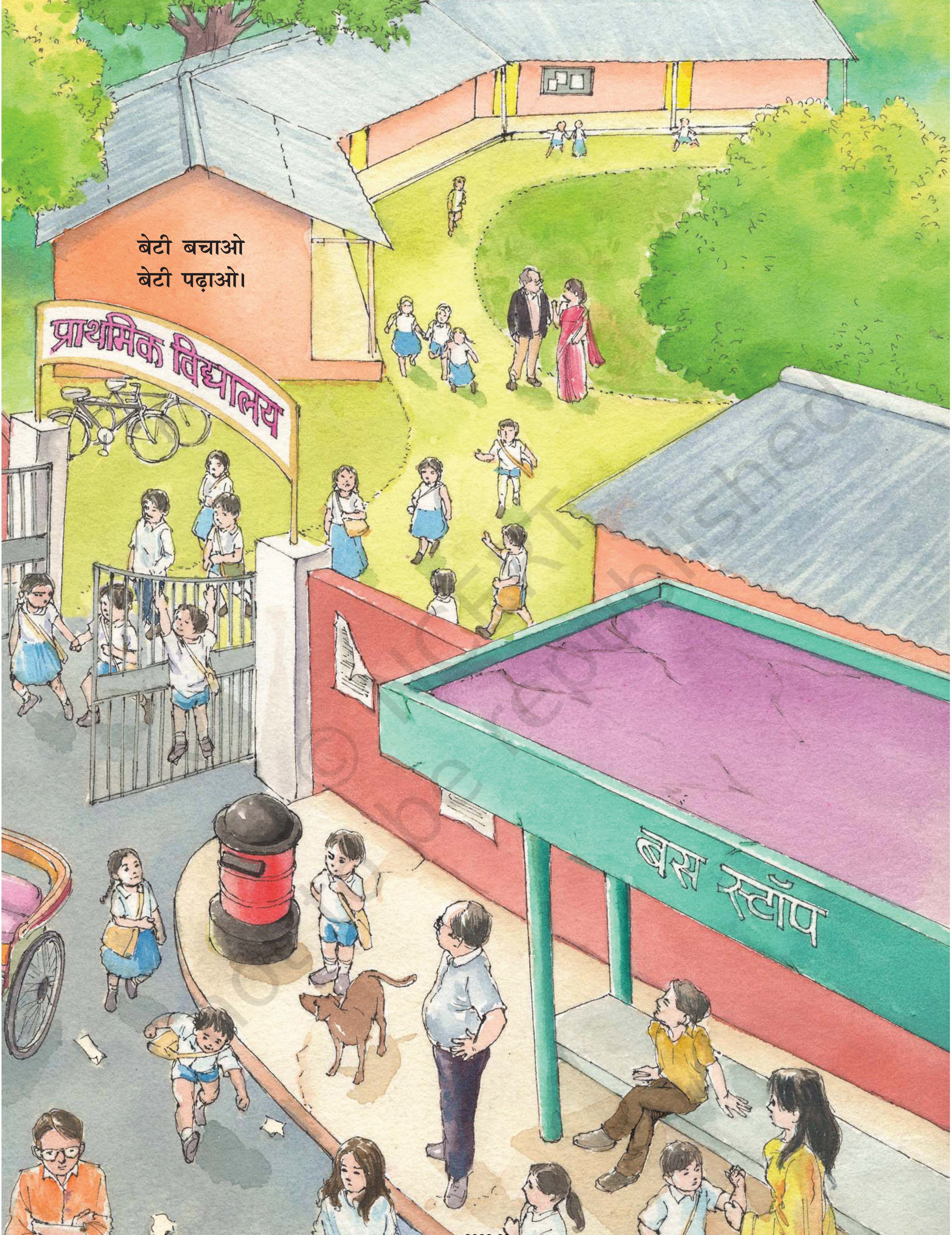
बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ।
प्राथमिक विद्यालय
बस स्टॉप

ब श स ऊ

घर कैसे जाओगी?

मैं .... जाती हूँ।

तुमने इनमें से किसकी सवारी की है? सही जगह पर हाँ ✓ या नहीं × का निशान लगाओ।

सवारी	मैंने सवारी की है	मैंने सवारी नहीं की है
रिक्शा		
बस		
रेलगाड़ी		
बैलगाड़ी		
साइकिल		
ऊँट		
स्कूटर		
भैंस		

© NCERT not to be republished

तुम कैसे जाते हो?

1. दादी के घर – ....
2. सिनेमा देखने – ....
3. स्कूल – ....
4. हाट/बाज़ार – ....

बताओ –

सवारी	टिकट लगेगा	पैसा लगेगा	मुफ़्त
रेलगाड़ी			
भैंस			
रिक्शा			
साइकिल			
ऊँट			
बैलगाड़ी			
बस			
गोदी			

© NCERT not to be republished

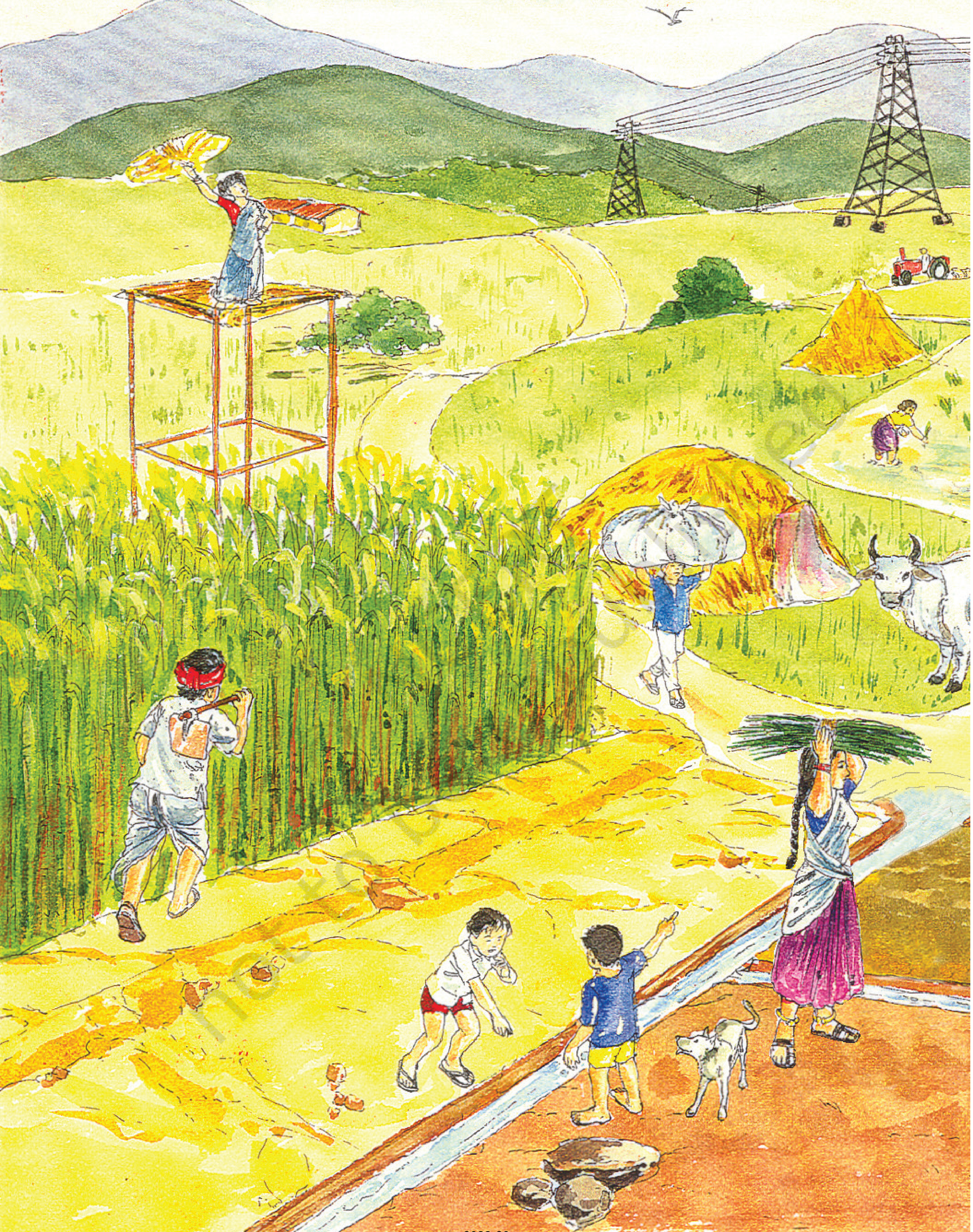

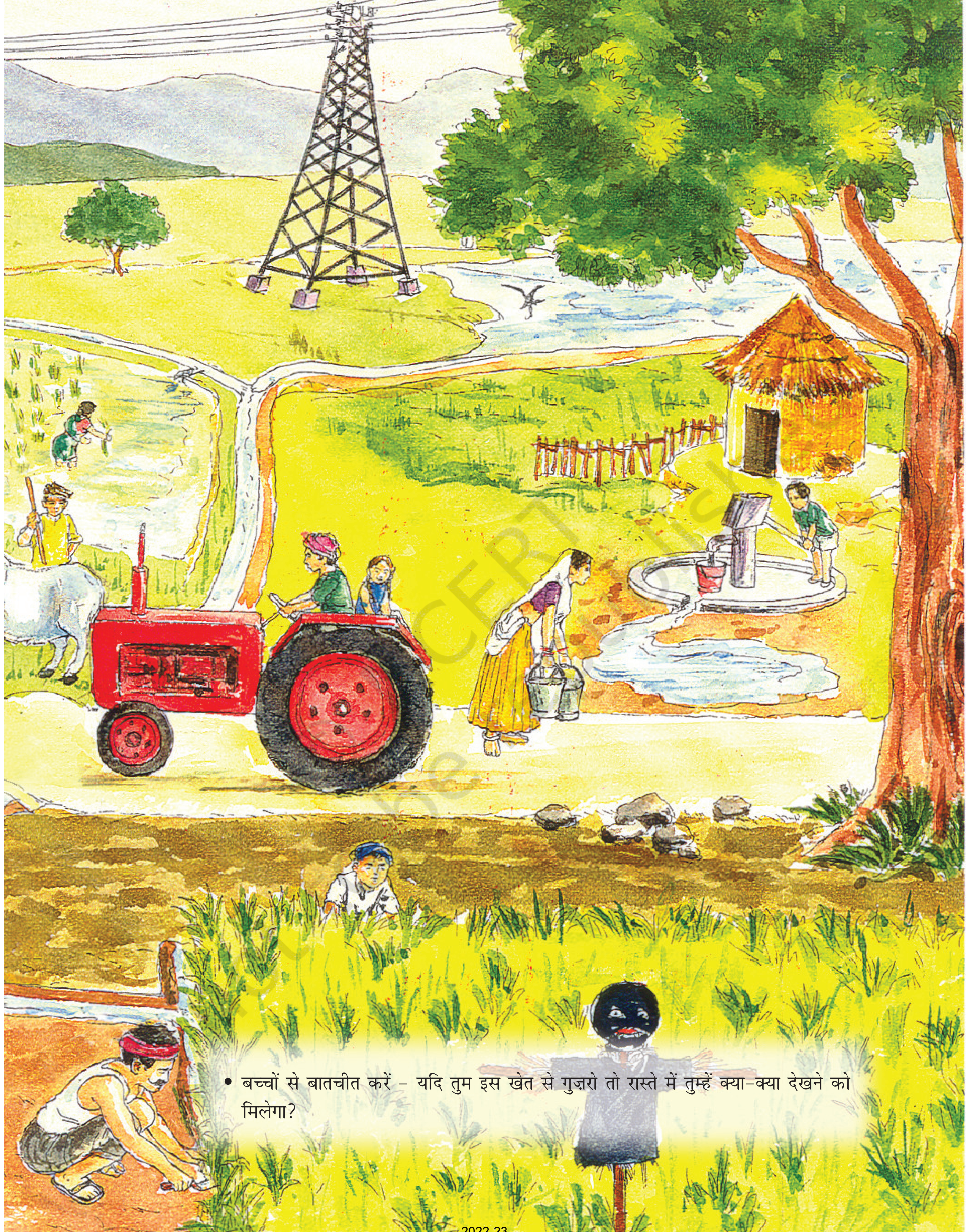

• बच्चों से बातचीत करें – यदि तुम इस खेत से गुज़रो तो रास्ते में तुम्हें क्या-क्या देखने को मिलेगा?

नीचे क्या? ऊपर क्या?

गन्ना ज़मीन के ऊपर उगता है और मूली नीचे।
सही जगह पर कुछ और चीज़ों के चित्र बनाओ।

- बच्चों से ज़मीन के नीचे और ऊपर उगने वाली चीज़ों के नाम पूछें। ज़मीन के नीचे उगने वाली चीज़ों को ज़मीन के नीचे वाले हिस्से में और ऊपर उगने वाली चीज़ों को ऊपर वाले हिस्से में बनवाएँ।

not to be republished NCERT

बूझो मेरा रंग

ख ध फ व

लाल	हरा

बैंगनी	पीला

नीला	काला

अदरक

बोड़ा

धनिया

धान
(चावल)

टमाटर

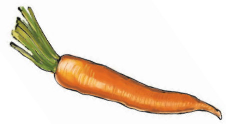
गाजर

खीरा

पालक

प्याज़

आलू

बैंगन

मूँगफली

मकई

- बच्चों से विभिन्न रंगों के नीचे उन रंगों वाली चीज़ों के नाम लिखने को कहें।

© NCERT not to be republished

हाट का खेल

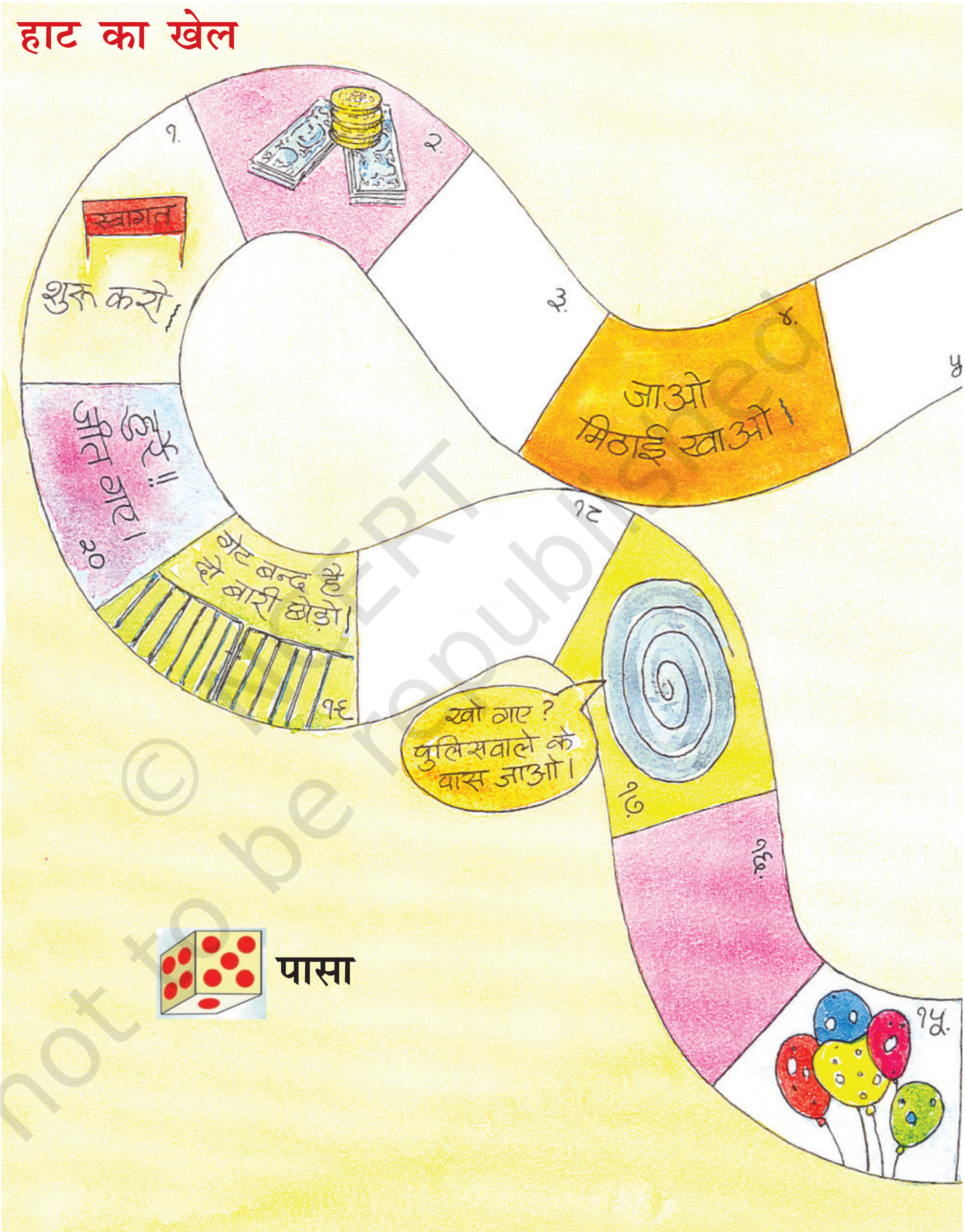

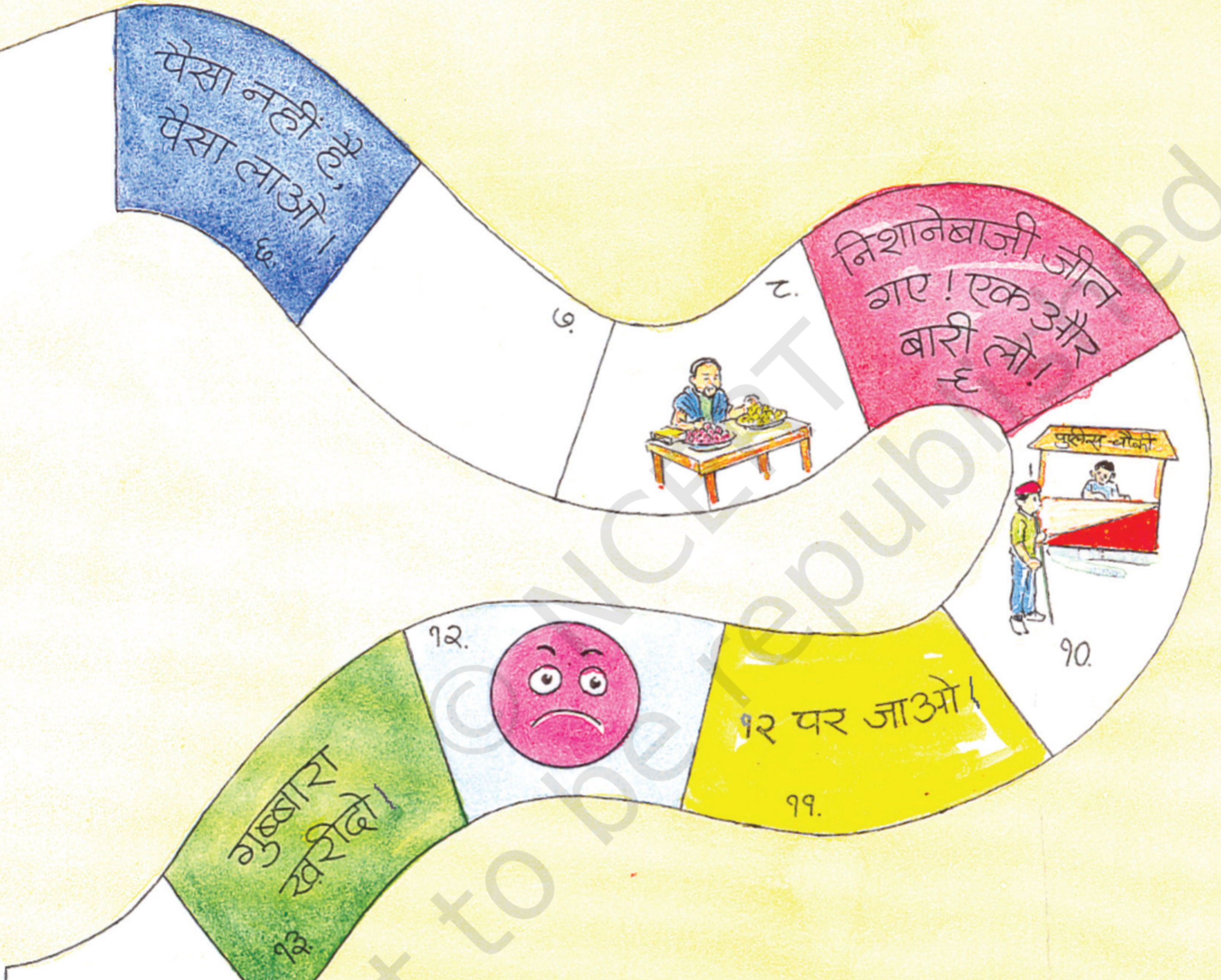

बच्चों से बातचीत करें। पासा बच्चों से बनवाएँ। माचिस की तीन खाली डिब्बियों को एक के ऊपर एक रखते हुए आपस में चिपका लें। उस पर रंगीन कागज़ चिपकाकर 6 तक गिनती लिखें। पासा तैयार है। इस खेल से बच्चों को देवनागरी के अंकों से परिचित करवाया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

0117CH04

4. पकौड़ी

दौड़ी–दौड़ी
आई पकौड़ी।

छुन–छुन छुन–छुन
तेल में नाची,
प्लेट में आ
शरमाई पकौड़ी।

दौड़ी–दौड़ी
आई पकौड़ी।

हाथ से उछली
मुँह में पहुँची,
पेट में जा
घबराई पकौड़ी।

दौड़ी–दौड़ी
आई पकौड़ी।

मेरे मन को
भाई पकौड़ी।

© NCERT not to be republished

क्या भाता है? क्या नहीं भाता?

ह ड़ औ
भ ज

चीज़ें	मज़े से खाएँगे	खाना पड़ेगा	बिल्कुल नहीं खाएँगे
जलेबी			
पकौड़ी			
बैंगन			
चुस्की			
करेला			
घीया (लौकी) 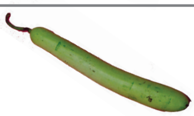			
आलू			
आम			

© NCERT not to be republished

बच्चों से उनकी पसंद-नापसंद की चीज़ों के बारे में बातचीत करें और उसके अनुसार उचित खाने में सही का निशान लगाने को कहें।

not to be republished

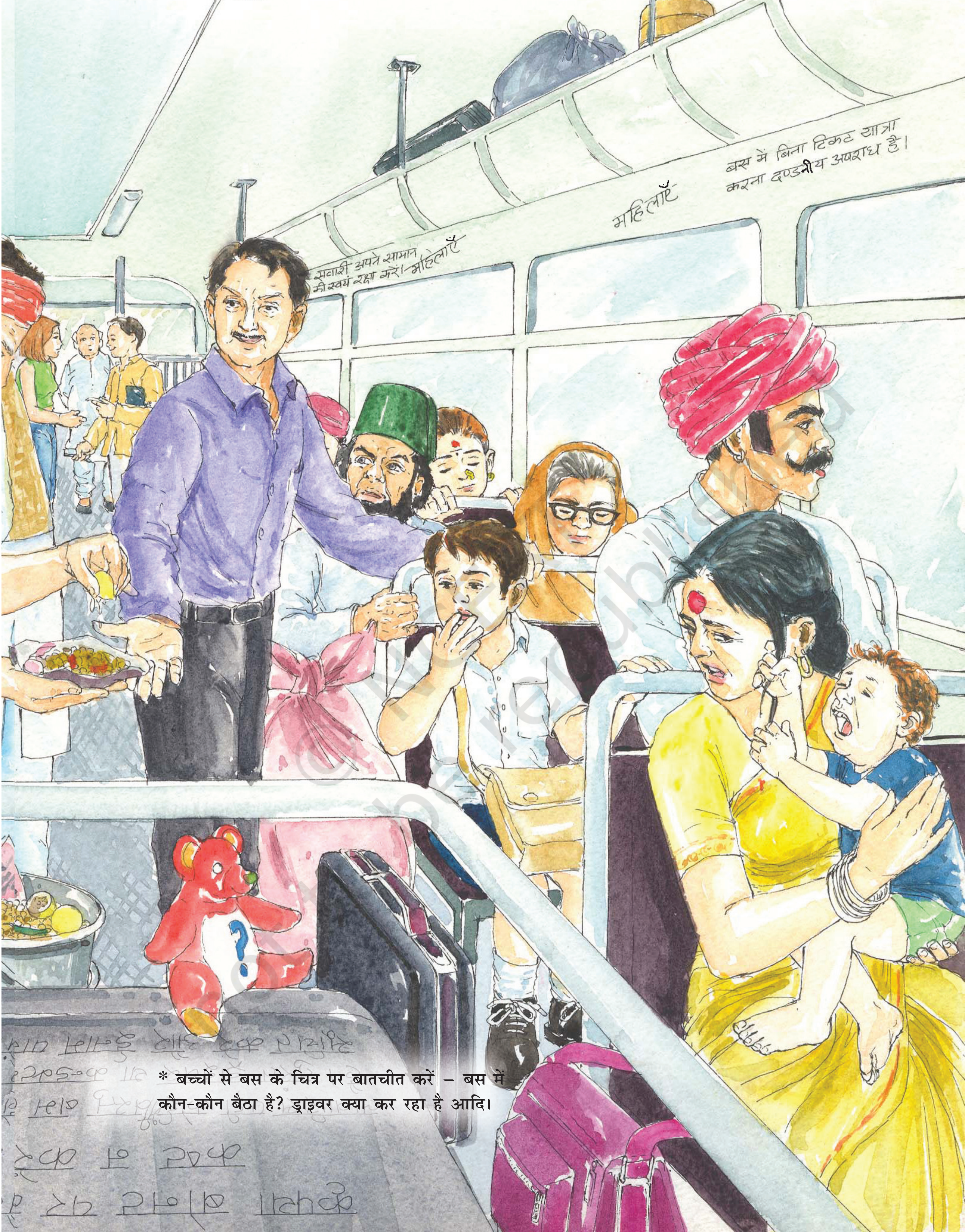

* बच्चों से बस के चित्र पर बातचीत करें – बस में कौन-कौन बैठा है? ड्राइवर क्या कर रहा है आदि।

क्या सुना?

ग ट य

खाली जगह में आवाज़ें लिखो।

भोंपू

....

सीटी

....

बस

....

रोता हुआ बच्चा

....

तुम्हें जो सवारी सबसे अच्छी लगती है, उसका चित्र बनाओ।

© NCERT not to be republished

१ पहिया, २ पहिए
बोलो किसके कितने पहिए?

ठेला	....	ट्रक	....
ताँगा	....	बस	....
स्कूटर	....	रिक्शा	....
बैलगाड़ी	....	कार	....
साइकिल	....	ऑटो रिक्शा	....
पानी का जहाज़	....	हवाई जहाज़	....

© NCERT not to be republished

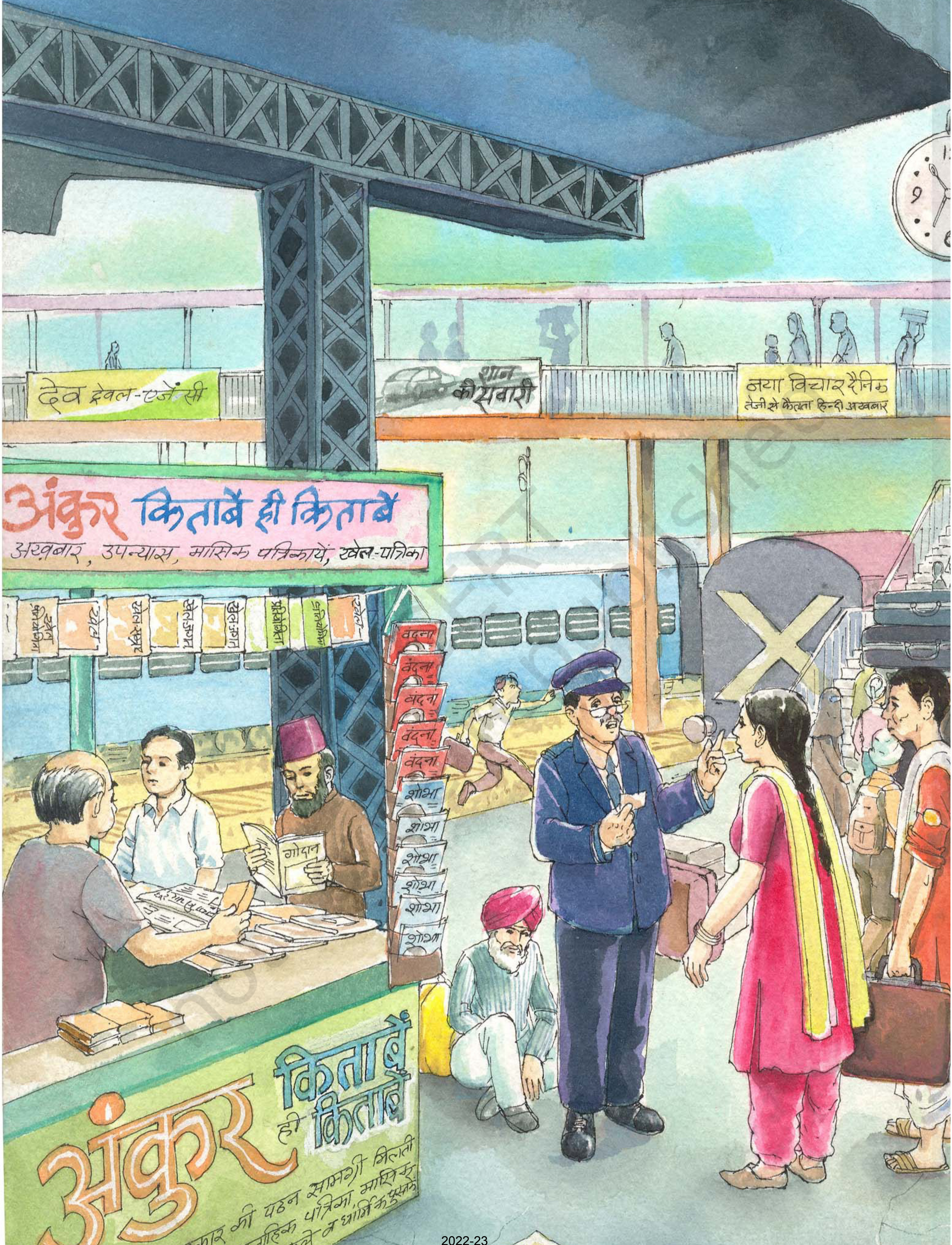
देव ट्रेवल-एजेंसी
शान की सवारी
नया विचार दैनिक
तेजी से फैलता हिन्दी अखबार
अंकुर किताबें ही किताबें
अखबार, उपन्यास, मासिक पत्रिकायें, खेल-पत्रिका
वंदना
शोभा
गोदान
अंकुर किताबें ही किताबें

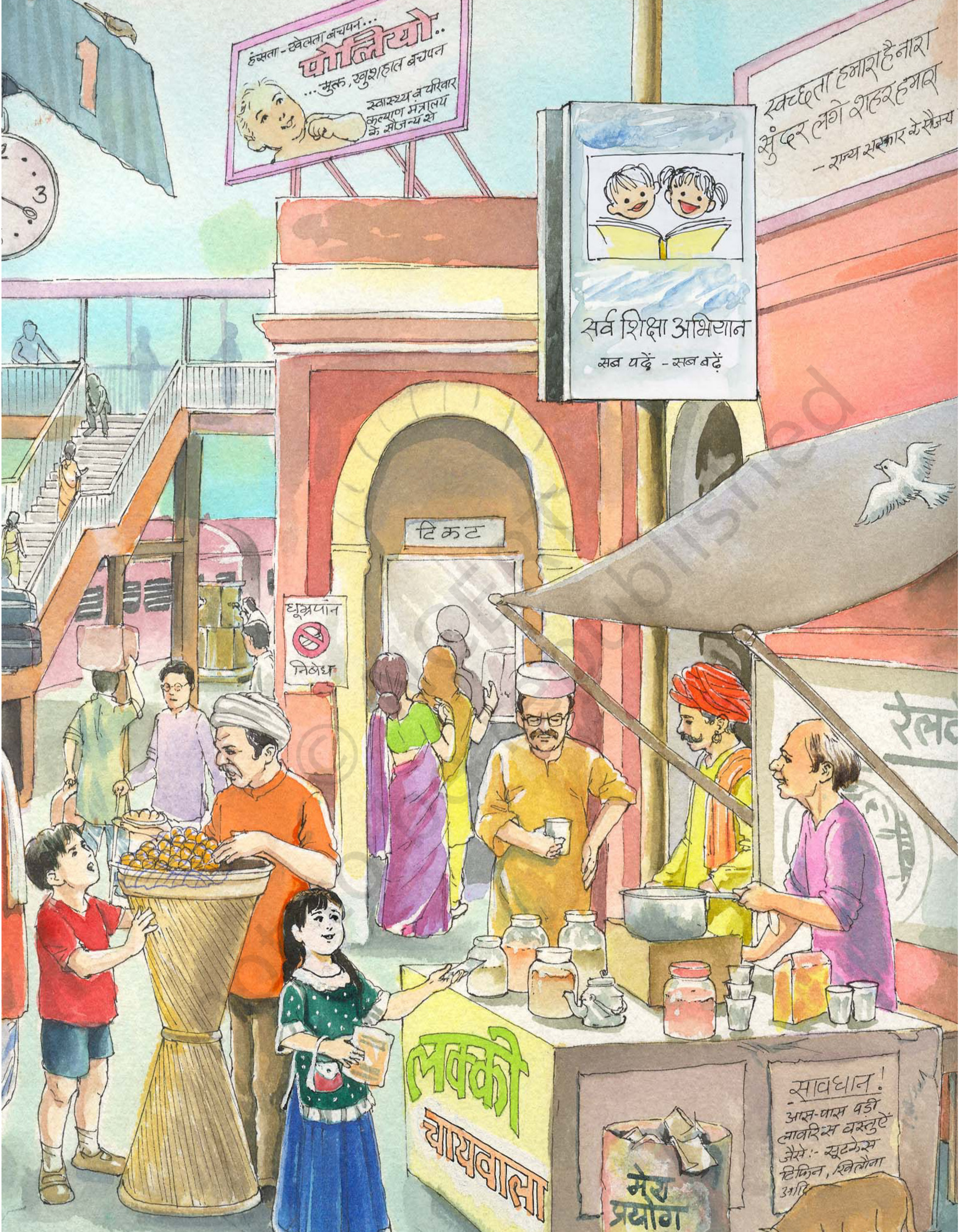
हंसता - खेलता बचपन...
पोलियो..
...मुक्त, खुशहाल बचपन
स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय के सौजन्य से
स्वच्छता हमारा है नारा
सुंदर लगे शहर हमारा
— राज्य सरकार के सौजन्य
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें - सब बढ़ें
टिकट
धूम्रपान
निषेध
लक्की
चायवाला
सावधान!
आस-पास पड़ी लावारिस वस्तुएं जैसे:- सूटकेस टिफिन, खिलौना
मेरा प्रयोग

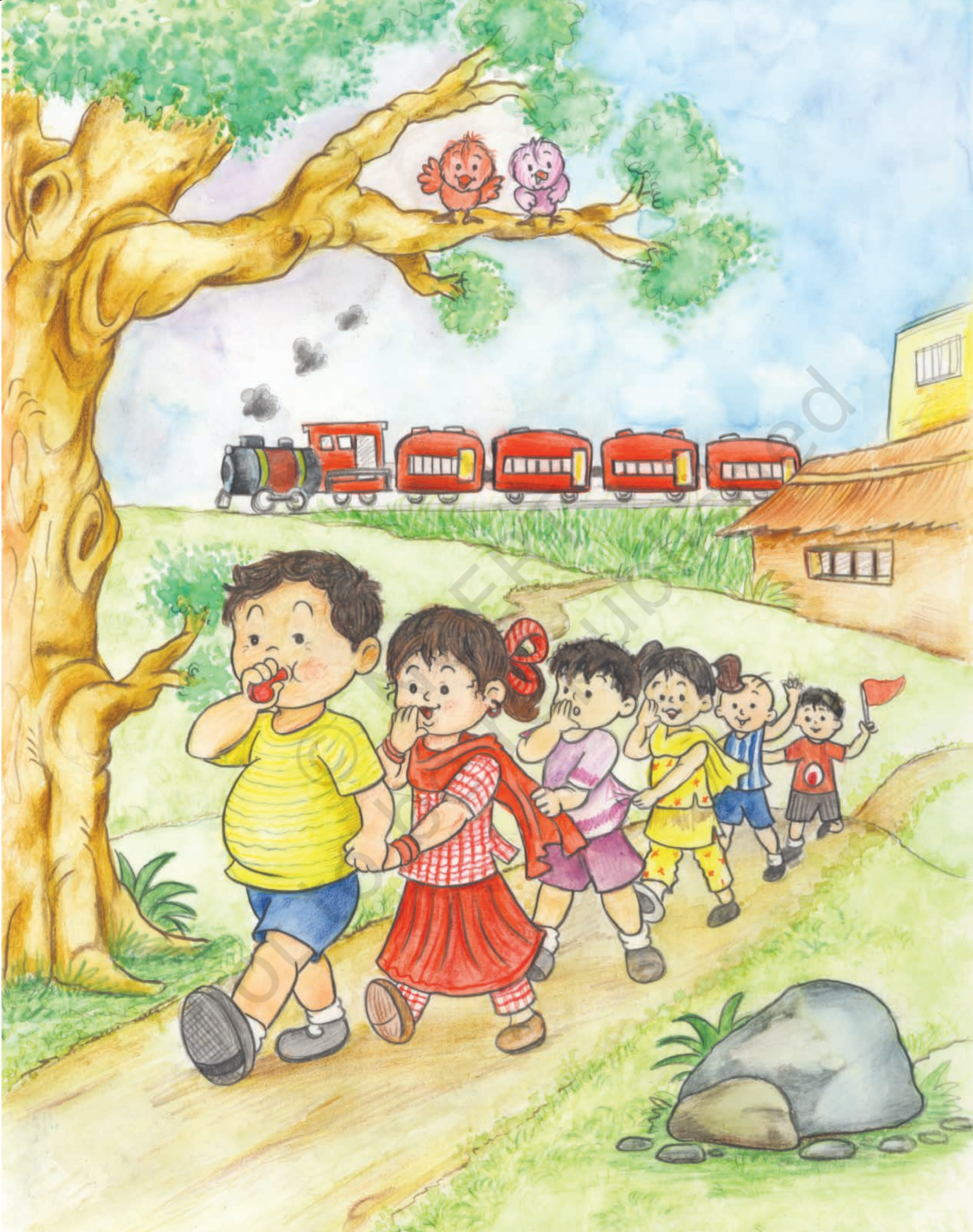

इ र

रेल का खेल

बच्चों ने मिलकर एक कविता बनाई, पढ़ो।

छुक-छुक-छुक चल दी रेल,
शुरू हुआ अब अपना खेल।
नदिया जंगल पीछे छूटे,
आ गया अपना गाँव सुमेल।
इसकी रेल न उसकी रेल,
ये तो है हम सबकी रेल।

बूझो तो जानें

1. बच्चे कौन-सा खेल खेल रहे हैं?
2. इस खेल में कितने बच्चे डिब्बा बने हैं?
3. कौन-सा बच्चा गार्ड बना है? तुमने यह कैसे जाना?
4. कौन-सा बच्चा इंजन बना है? तुमने यह कैसे जाना?

खेल ही खेल

बच्चे मिलकर रेल का खेल खेल रहे हैं। तुम अपने दोस्तों के साथ मिलकर कौन-कौन से खेल खेलते हो? किन्हीं तीन खेलों के नाम लिखो।

....

© NCERT not to be republished

इतने सारे रंग

पिछले पन्नों में इन रंगों को ढूँढ़ो। इन रंगों वाली चीज़ों के चित्र बनाओ।

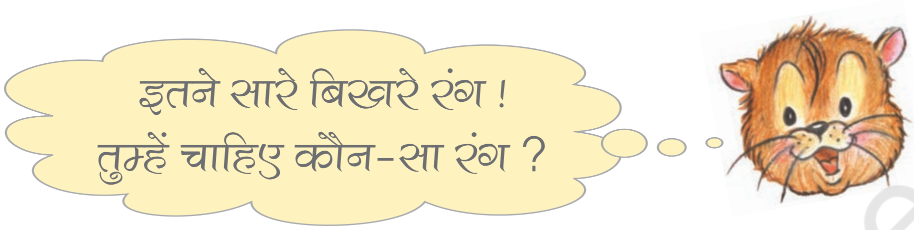

© NCERT not to be republished

नाम बताओ

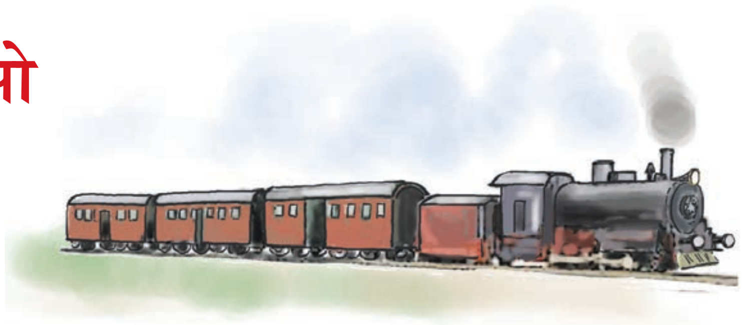

....

....

....

पूरा करो

छुक छुक छुक ....

.... अपना खेल।

.... उसकी रेल

ये तो है हम ....।

हर डिब्बे पर उसके रंग वाली किसी चीज़ का नाम लिखो।

अब तक पिछले पन्नों में जितनी भी चीज़ों के नाम आए हैं उनकी सूची बच्चों की मदद से श्यामपट्ट पर लिखें। उन चीज़ों में से किसी एक चीज़ को रंग के अनुसार अलग-अलग रंग के डिब्बों में लिखने को कहें।

© NCERT not to be republished

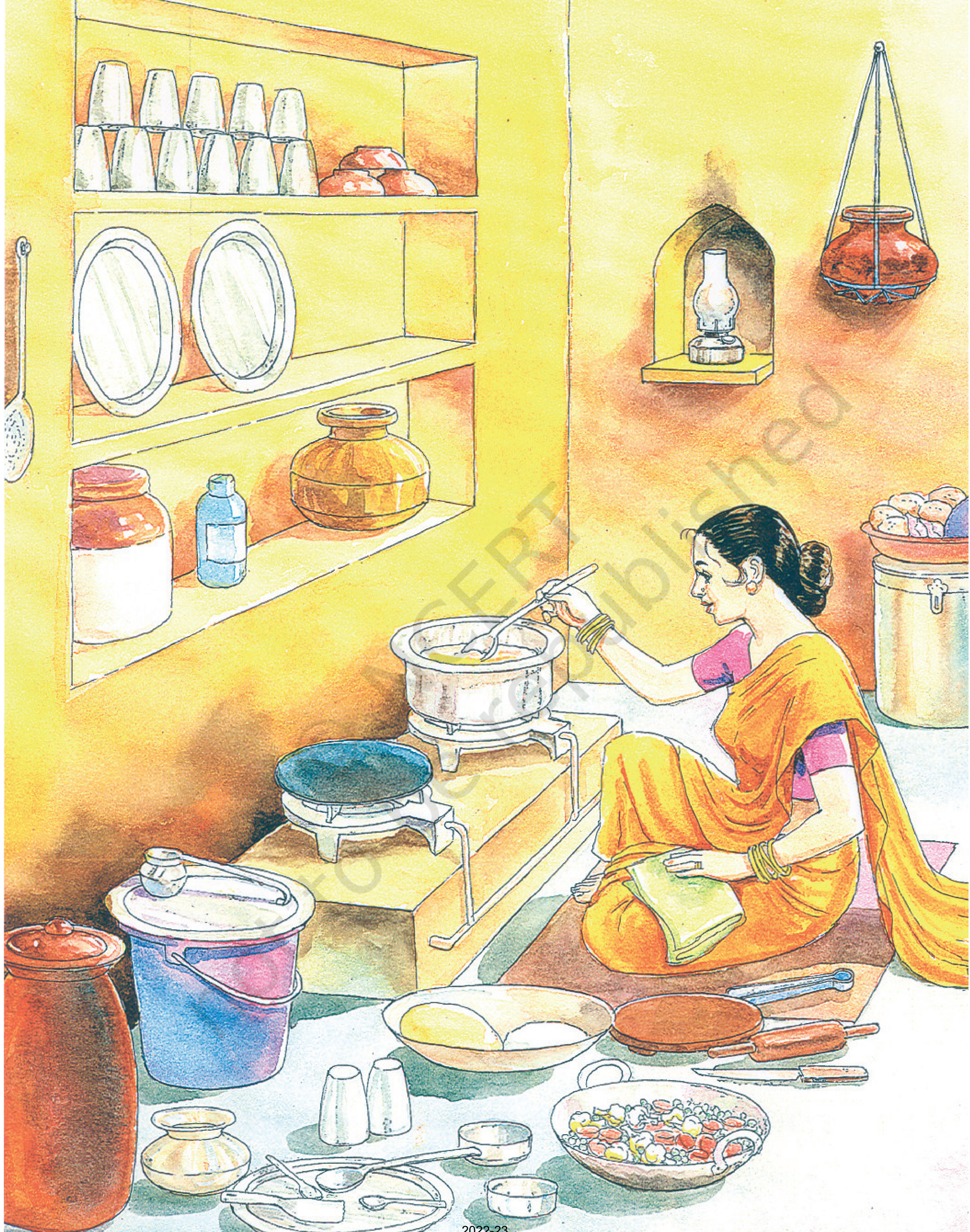

बच्चों से बातचीत करें- रसोईघर में कौन क्या कर रहा है? टोकरी में कौन-सी सब्ज़ियाँ रखी हैं? तुम अपनी माँ के साथ रसोई में क्या-क्या काम करवाते हो?

0117CH05

5. रसोईघर

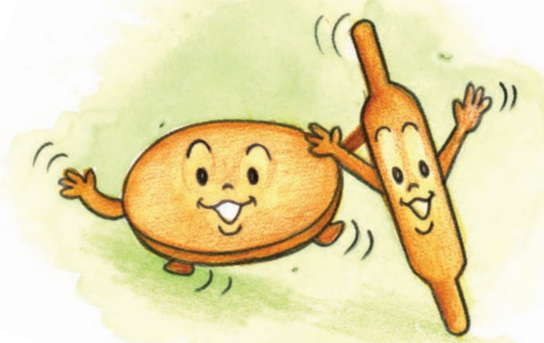

आज रसोईघर की खिड़की,
मुन्ना-मुन्नी खोल रहे हैं।
अंदर देखा, चकला-बेलन,
चाकू-छलनी बोल रहे हैं।

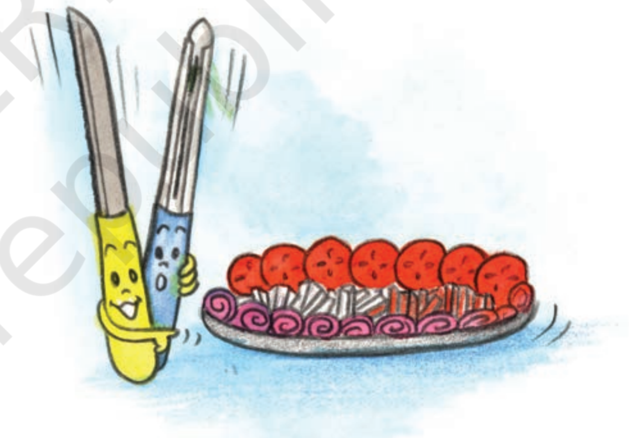

मैं चाकू, सब्ज़ी-फल काटूँ,
टुकड़ा-टुकड़ा सबको बाँटूँ।
गाजर-मूली प्याज़-टमाटर,
छीलो काटो रखो सजाकर।

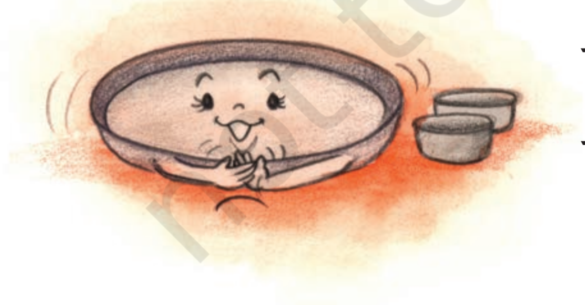

गोल चाँद-सी हूँ मैं थाली,
बज सकती हूँ बनकर ताली।
मुझमें रोटी-सब्ज़ी डाली,
और सभी ने झटपट खा ली।

© NCERT not to be republished

कुछ और काम

मैं चाकू हूँ।
मैं सब्ज़ी .... ।

हम .... हैं।
हम .... बेलते हैं।

मैं .... हूँ।
मैं .... छानती हूँ।

मैं .... हूँ।
मुझमें .... खाओ।

मैं छीलनी हूँ।
मुझसे छिलका ....।

© NCERT not to be republished

2022-23

सही-गलत

रसोईघर का चित्र देखो और बताओ।

1. पतीला चूल्हे के नीचे है। ✗
2. चूहा अँगीठी के अंदर है। ☐
3. टोकरी में आम रखे हैं। ☐
4. अक्षय चावल बीन रहा है। ☐
5. माँ खाना बना रही हैं। ☐
6. आले में लालटेन रखी है। ☐
7. दादी किताब पढ़ रही हैं। ☐
8. सुहानी खिड़की से झाँक रही है। ☐

© NCERT not to be republished

काम ही काम

यहाँ क्या काम हो रहा है? गोला लगाओ

सेंकना

बेलना

तलना

किनसे काटोगे?

चाकू

सिलबट्टा

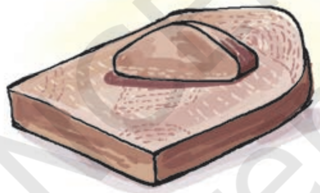

छीलनी

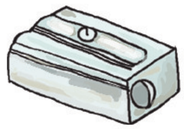

पहँसुल

दाव

कैंची

हथौड़ा

गुलेल

ढक्कन

- पहँसुल का उपयोग पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल आदि पूर्व के कई राज्यों में सब्ज़ी काटने के लिए किया जाता है।
- दाव का इस्तेमाल उत्तर-पूर्व के राज्यों में बाँस, सब्ज़ी आदि काटने के लिए किया जाता है।

© NCERT not to be republished

किससे क्या काटोगे?

ढ

कपड़ा

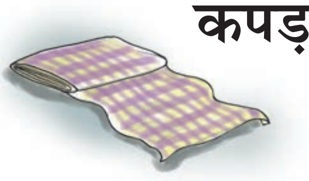

कागज़

आम

बैंगन

गन्ना

रस्सी

सेब

कैंची से	चाकू से

© NCERT not to be republished

बिंदु जोड़कर चित्र पूरा करो।

© NCERT not to be republished

0117CH06

6. चूहो! म्याऊँ सो रही है

घर के पीछे,
छत के नीचे,
पाँव पसारे,
पूँछ सँवारे।

देखो कोई,
मौसी सोई,
नासों में से,
साँसों में से।

घर घर घर घर हो रही है
चूहो! म्याऊँ सो रही है।

बिल्ली सोई,
खुली रसोई,
भरे पतीले,
चने रसीले।

© NCERT not to be republished

उलटो मटका,
देकर झटका,
जो कुछ पाओ,
चट कर जाओ।

आज हमारा दूध दही है,
चूहो! म्याऊँ सो रही है।

मूँछ मरोड़ो,
पूँछ सिकोड़ो,
नीचे उतरो,
चीज़ें कुतरो।

आज हमारा,
राज हमारा,
करो तबाही,
जो मनचाही।

आज मची है,
चूहा शाही,
डर कुछ भी चूहों को नहीं है,
चूहो! म्याऊँ सो रही है।

© NCERT not to be republished

पढ़ो

घर के पीछे,
छत के नीचे

पाँव पसारे,
पूँछ सँवारे

भरे पतीले,
चने रसीले

उलटा मटका,
देकर झटका

मूँछ मरोड़ो,
पूँछ सिकोड़ो

नीचे उतरो,
चीज़ें कुतरो

चलो, चूहा बनाएँ

तीन लिखो

मूँछ कान बनाओ

आँखें और
पैर बनाओ

पूँछ बनाओ

© NCERT
not to be republished

तुक मिलाओ, आगे बढ़ाओ

द उ

यह चित्र बिहार की मधुबनी शैली में बना है। इस चित्र की ओर बच्चों का ध्यान दिलाएँ।

मकड़ी-ककड़ी-लकड़ी

हमने तीन चीज़ें देखीं,
दादा तीन चीज़ें देखीं।

एक डाल पर थी इक मकड़ी,
लकड़ी पर बैठी थी मकड़ी,
मकड़ी खा रही थी ककड़ी।

लकड़ी, मकड़ी, ककड़ी,
मकड़ी, ककड़ी, लकड़ी,
ककड़ी, लकड़ी, मकड़ी।

© NCERT not to be republished

हमने तीन चीज़ें देखीं,
दादा तीन चीज़ें देखीं।

एक खेत में थी कुछ बालू,
बालू पर बैठा था भालू,
भालू खा रहा था आलू।

बालू, भालू, आलू,
भालू, आलू, बालू,
आलू, बालू, भालू।

© NCERT not to be republished

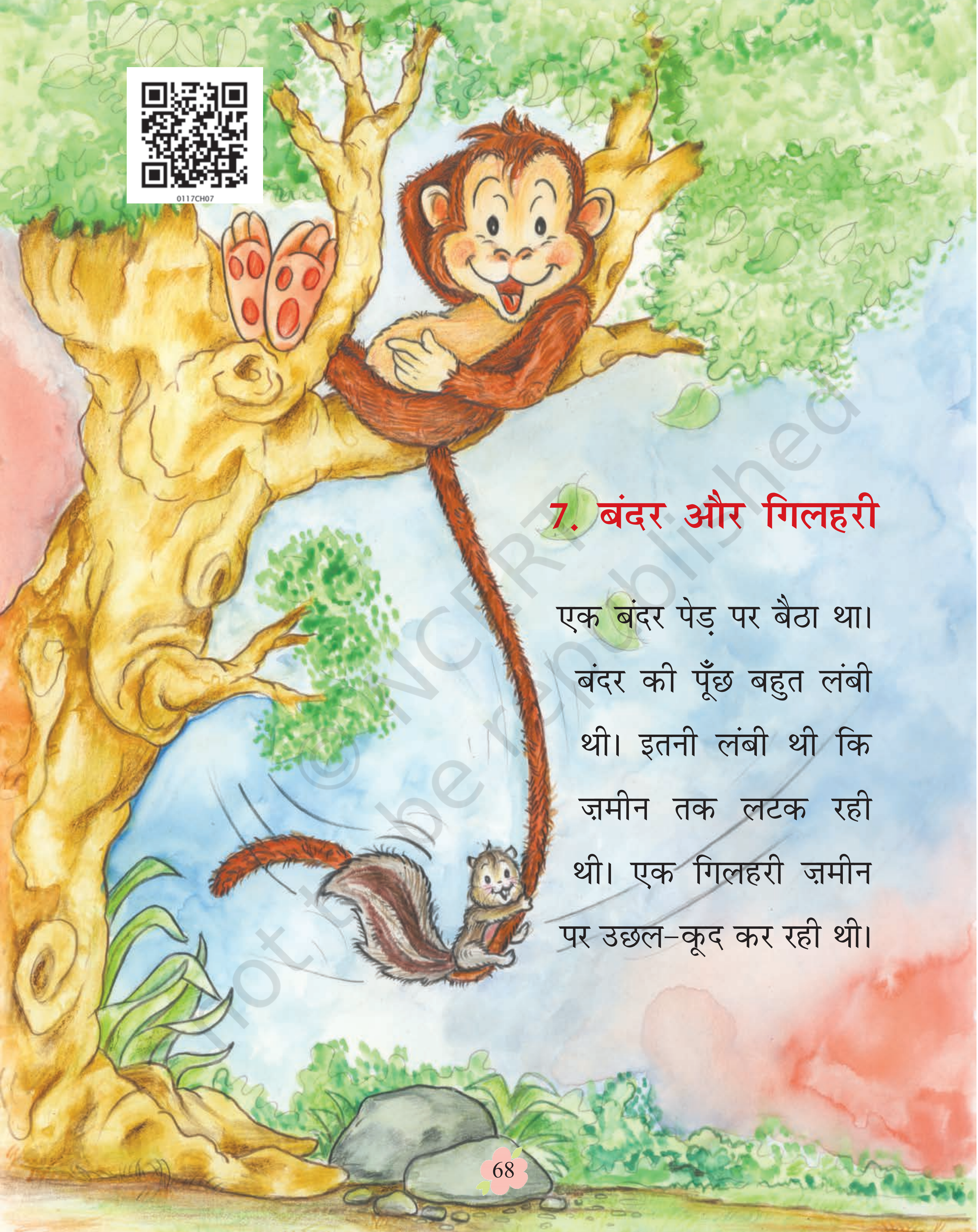

7. बंदर और गिलहरी

एक बंदर पेड़ पर बैठा था। बंदर की पूँछ बहुत लंबी थी। इतनी लंबी थी कि ज़मीन तक लटक रही थी। एक गिलहरी ज़मीन पर उछल-कूद कर रही थी।

© NCERT not to be republished

अचानक उसे पूँछ दिखाई दी। उसने सोचा – यह झूला कहाँ से आ गया? थोड़ी देर पहले तो नहीं था। वह पूँछ पर चढ़कर झूलने लगी। बंदर को गुदगुदी हुई। उसने नीचे देखा। वह हँसकर बोला – बहन गिलहरी! यह क्या कर रही हो? मुझे गुदगुदी हो रही है। गिलहरी चौंकी – बंदर भैया, यह तुम हो? मैं तो तुम्हारी पूँछ को झूला समझकर झूल रही थी। बड़ा मज़ा आ रहा था।

और गिलहरी हँसती हुई पेड़ की डाली पर चढ़ गई।

© NCERT not to be republished

गप्पें

बंदर की पूँछ लंबी थी, इतनी लंबी थी,
इतनी लंबी जैसे *सड़क*

चूहे की मूँछ इतनी घनी थी, इतनी घनी थी,
इतनी घनी थी जैसे ....।

भालू इतना मोटा था, इतना मोटा था,
इतना मोटा था जैसे ....।

ऊँट इतना ऊँचा था, इतना ऊँचा था,
इतना ऊँचा था जैसे ....।

चुहिया इतनी छोटी थी, इतनी छोटी थी,
इतनी छोटी थी जैसे ....।

कुत्ते की पूँछ इतनी टेढ़ी थी, इतनी टेढ़ी थी,
इतनी टेढ़ी थी जैसे ....।

........कोयल की.......................इतनी.......................थी.......................

.......................जैसे.......................।

© NCERT not to be republished

गुदगुदी

कहानी में बंदर को गुदगुदी हुई।
अपने दोस्त को गुदगुदी करो।
पेट पर, पीठ पर, गर्दन पर,
हथेली पर, तलवे पर।
क्या हुआ?
अब खुद को गुदगुदी करके देखो।
अब क्या हुआ?

क्या करोगे

गिलहरी ने बंदर की पूँछ से झूला झूला, तुम इन चीज़ों से क्या-क्या करोगी? करके दिखाओ।

रुमाल ....

पेंसिल ....

फुटा 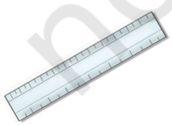 ....

© NCERT not to be republished

क्या-क्या

तुम तो कितनी सारी चीज़ें खाते हो, जैसे- दूध-भात, संतरा, केला। इनके अलावा तुम और क्या-क्या खाते हो?

गिलहरी क्या-क्या खा लेती होगी?

बंदर क्या-क्या खा लेता होगा?

बच्चे अपनी कल्पना से लिखें। लिखने में बच्चों की मदद करें।

© NCERT not to be republished
2022-23

कौन-कौन

जानवरों में कौन-कौन उछल-कूद करता होगा?

गाय	शेर	गधा	गिलहरी	हाथी
खरगोश	बिल्ली	चूहा	कुत्ता	ऊँट

उछल-कूद करते हैं	उछल-कूद नहीं करते
....	....
....	....
....	....
....	....

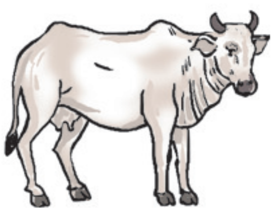

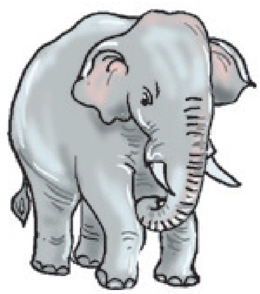

© NCERT not to be republished

0117CH08

8. पतंग

सर–सर सर–सर उड़ी पतंग,
फर–फर फर–फर उड़ी पतंग।

इसको काटा, उसको काटा,
खूब लगाया सैर सपाटा।

अब लड़ने में जुटी पतंग,
अरे कट गई, लुटी पतंग।

सर–सर सर–सर उड़ी पतंग,
फर–फर फर–फर उड़ी पतंग।

© NCERT not to be republished

पतंग का चित्र बनाओ।

अब कविता बनाएँ

सर–सर सर–सर उड़ी पतंग

घंटी बोली ....

उड़ता कपड़ा ....

.... खन–खन–खन

© NCERT not to be republished

सोचो और लिखो

तुम पतंग के साथ सैर-सपाटे पर गईं। वहाँ तुमने क्या-क्या देखा?

....

....

पतंग कटकर कहाँ-कहाँ गिर सकती है?

....

....

कागज़ से कुत्ता बनाओ।

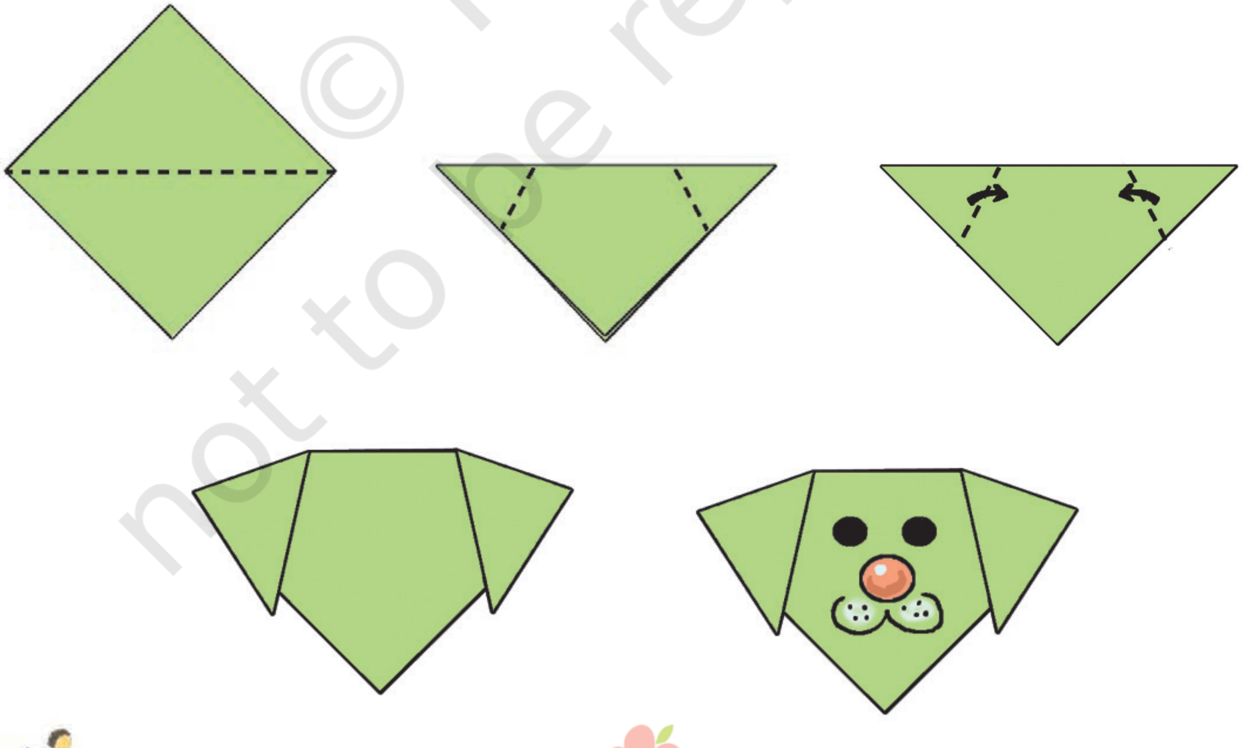

© NCERT not to be republished

कहती है अब खेल का समय

२४ हुर्रे! जीत गई	२३ जल्दी–जल्दी चार बार बोलो– कच्चा पापड़ पक्का पापड़। आगे बढ़ो।	२२ 	२१ पाँच बार चुटकी बजाओ और चुस्की का मज़ा लो।	२० 	१९
१३ 	१४	१५ 	१६	१७ **आ** से शुरू होने वाली चार चीज़ों के नाम बताओ। झूला झूलो।	१८
१२ बीस की गिनती पूरी होने से पहले बाहर से एक पत्थर लेकर आओ। आम खाओ	११	१०	९ 	८	७ **म** से शुरू होने वाला कोई गाना सुनाओ। पगड़ी पहनो।
१ शुरू करो।	२ मछली पर कविता सुनाओ नाव में जाओ।	३	४	५ **क** से शुरू होने वाले पाँच बच्चों के नाम बताओ। पतंग उड़ाओ।	६

बच्चे सुझाया गया काम करेंगे। सही करने पर आगे बढ़ेंगे। गलत करने पर एक बारी छोड़ेंगे।

© NCERT not to be republished

9. गेंद-बल्ला

0117CH09

गेंद ने बल्ले से कहा – तुम मुझे क्यों मारते हो?
बल्ले ने कहा – मारूँ नहीं तो खेल कैसे हो?

गेंद जब बल्ले के पास आई तो उसने उसे ज़ोर से मारा।

गेंद कुदकती-फुदकती दूर जाकर एक झाड़ी में छिप गई।

not to be republished © NCERT

बल्ला उसे ढूँढ़ता रहा, ढूँढ़ता रहा। ढूँढ़ते–ढूँढ़ते शाम हो गई। अँधेरा घिरने लगा। गेंद खुश थी कि बल्ला परेशान हो रहा है। बल्ला निराश होकर लौट चला।

तभी गेंद ने झाड़ी में से चिल्लाकर कहा – मैं यहाँ हूँ। आओ, मुझे ले लो।

बल्ले ने उसे झाड़ी के नीचे से खींचकर उठा लिया। गेंद ने कहा – देखो, अब मुझे मारना मत।

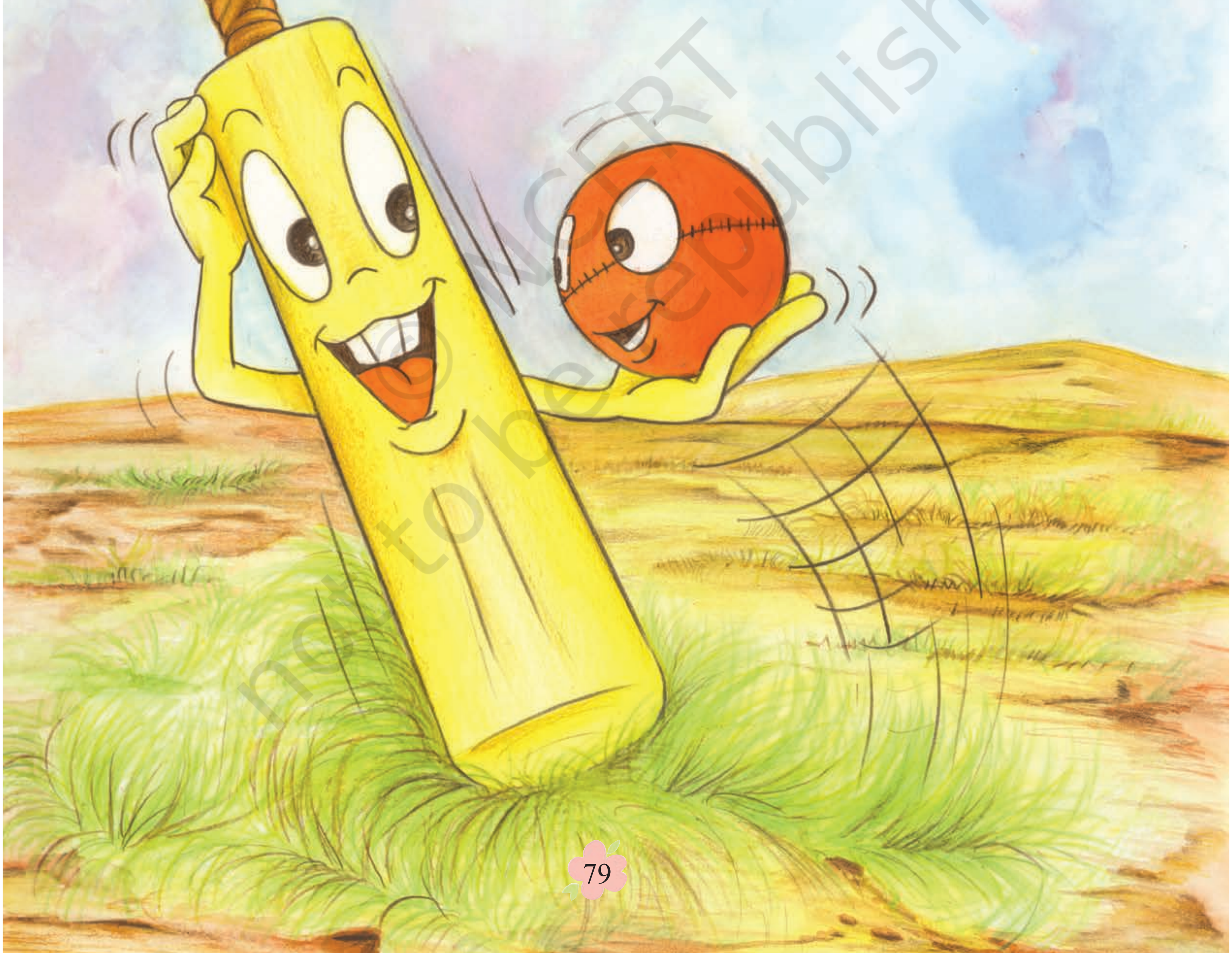

© NCERT not to be republished

गिल्ली डंडे के खेल में गिल्ली को डंडे से मारते हैं। कुछ और खेल बताओ, जिनमें एक चीज़ को दूसरी से मारा जाता है।

....

....

....

गेंद खो गई तो गेंद–बल्ला नहीं खेल पाएँगे।

गुल्ली खो गई तो ....

माँझा खो गया तो ....

पासा खो गया तो ....

चिड़ी खो गई तो ....

अगर तुम्हारे घर में गेंद खो गई तो कहाँ–कहाँ ढूँढ़ोगे?

....

....

....

© NCERT not to be republished

10. बंदर गया खेत में भाग

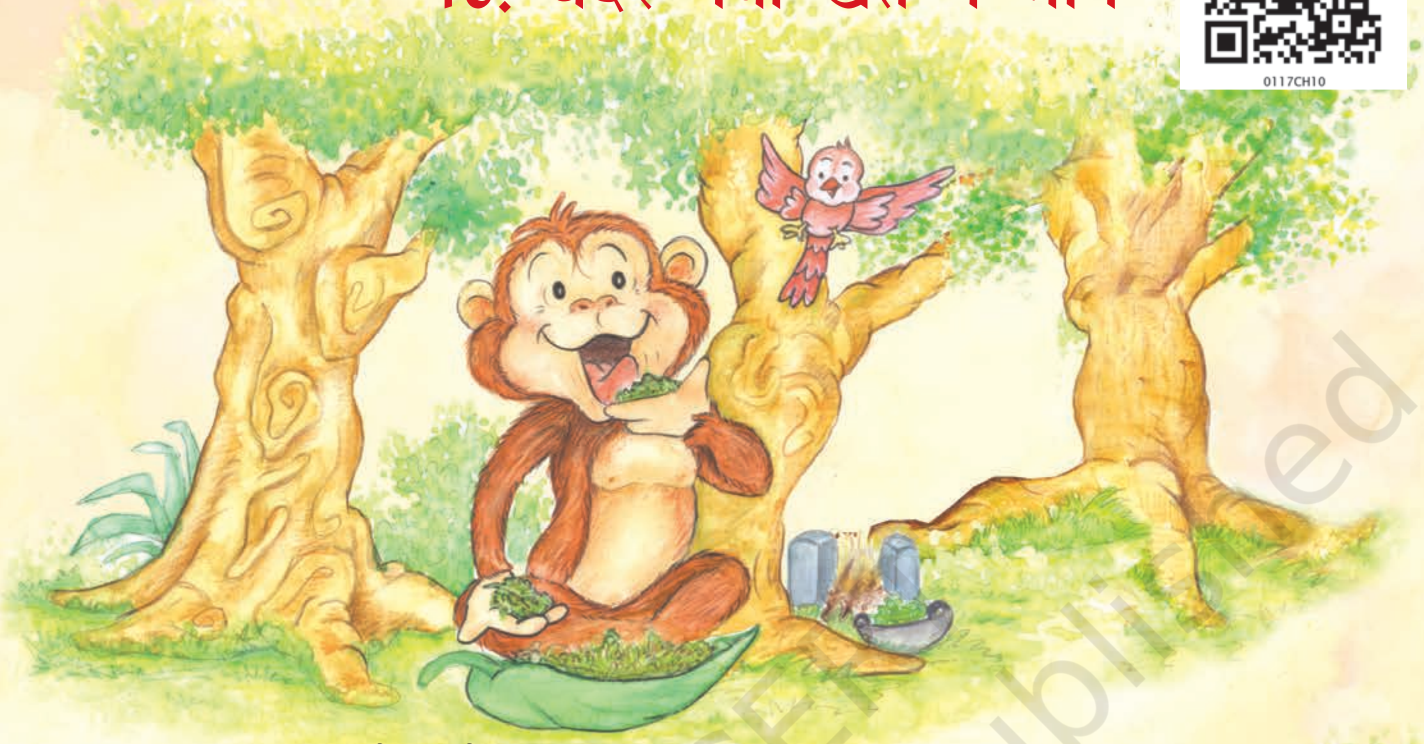

बंदर गया खेत में भाग,
चुट्टर-मुट्टर तोड़ा साग।

आग जलाकर चट्टर-मट्टर,
साग पकाया खद्दर-बद्दर।

सापड़-सूपड़ खाया खूब,
पोंछा मुँह उखाड़कर दूब।

चलनी बिछा, ओढ़कर सूप,
डटकर सोए बंदर भूप।

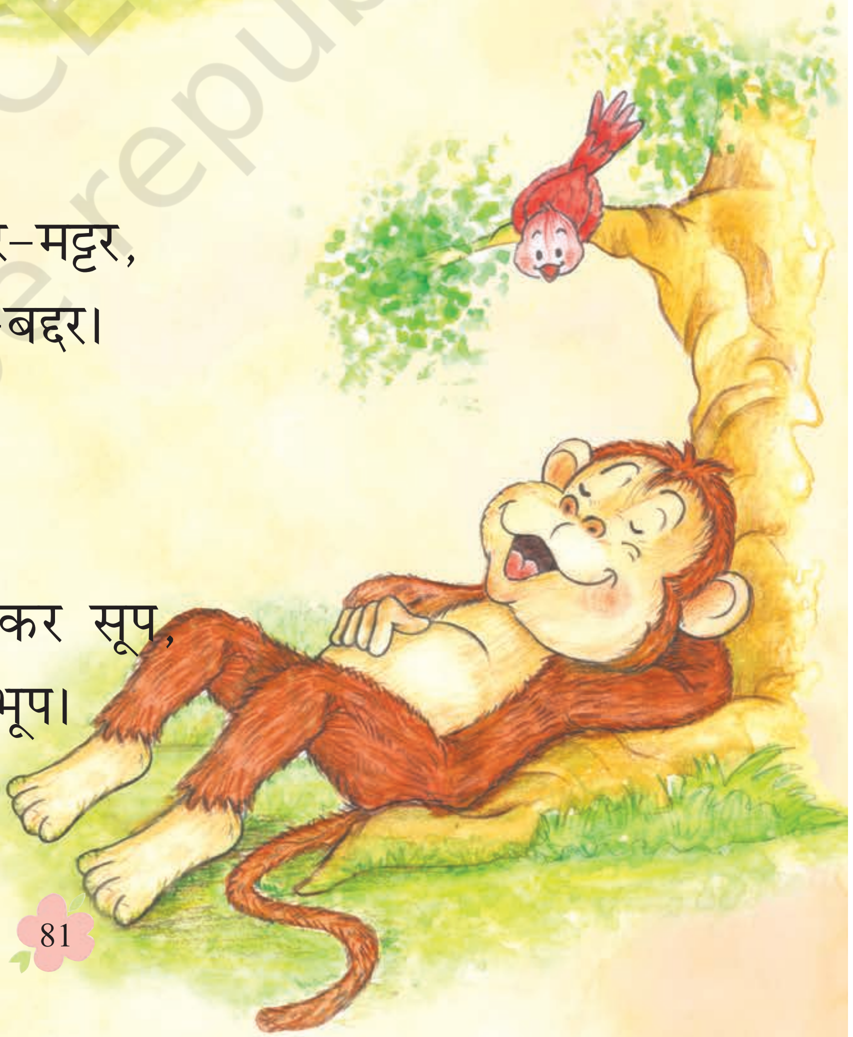

© NCERT not to be republished

क्या बिछाया, क्या ओढ़ा?

बंदर चलनी बिछाकर, सूप ओढ़कर सो गया।
लिखो, ये कैसे सोएँगे?

		क्या बिछाएँगे?	क्या ओढ़ेंगे?
हाथी	:	....	....
चींटी	:	....	....
गिलहरी	:	....	....
शेर	:	....	....

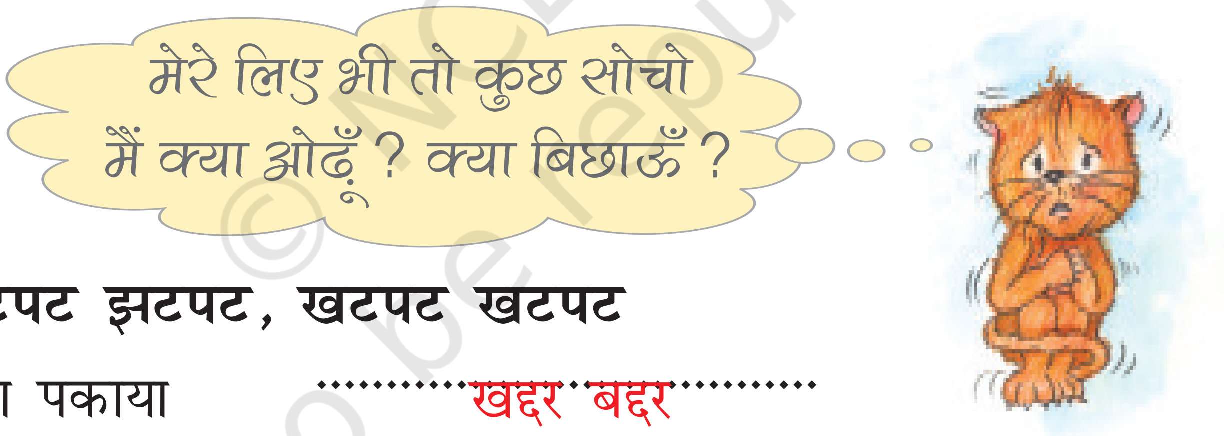

झटपट झटपट, खटपट खटपट

साग पकाया ....खद्दर बद्दर........

खाया सबने ....

पानी पिया ....

मारे खर्राटे ....

गिरे पलंग से ....

2022-23

भागो, भागो, भागो!!

बंदर खेत से साग तोड़कर भागा। कौन-कौन से काम करने के बाद तुम्हें भागना पड़ता है?

....

....

....

....

....

इसमें कितनी तरह की टोपियाँ और पगड़ियाँ हैं? बताओ।

© NCERT not to be republished

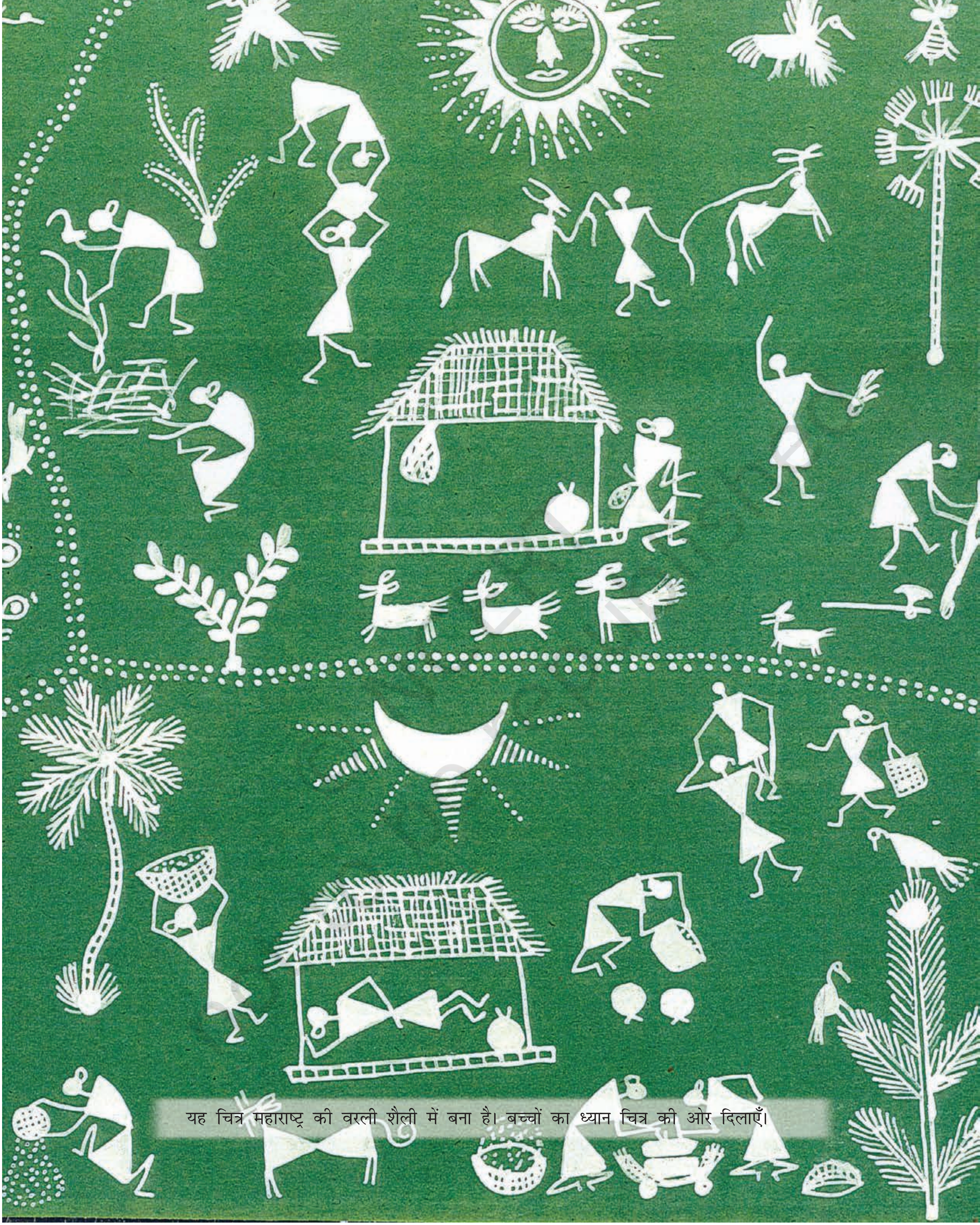

यह चित्र महाराष्ट्र की वरली शैली में बना है। बच्चों का ध्यान चित्र की ओर दिलाएँ।

11. एक बुढ़िया

0117CH11

कहीं एक बुढ़िया थी जिसका
नाम नहीं था कुछ भी,
वह दिन भर खाली रहती थी
काम नहीं था कुछ भी।
काम न होने से उसको
आराम नहीं था कुछ भी,
दोपहरी, दिन, रात, सबेरे,
शाम नहीं थी कुछ भी।

© NCERT not to be republished

नाम बताओ, काम बताओ

बिना नामवाली बुढ़िया का कोई नाम रखो।

....

वह दिन भर खाली रहती थी। उसके लिए कुछ काम सुझाओ।

....

....

....

काम करो कुछ काम करो

तुम्हारे घर में सबसे ज़्यादा काम कौन करता है?

....

तुम्हारे घर में सबसे ज़्यादा आराम कौन करता है?

....

© NCERT not to be republished

12. मैं भी...

0117CH12

एक अंडे में से बत्तख का बच्चा निकला।
लो, मैं अंडे में से निकल आया
बत्तख का बच्चा बोला।

एक और अंडे में से मुर्गी का चूज़ा
निकला। मैं भी आ गया –
चूज़ा बोला।

मैं घूमने जा रहा हूँ –
बत्तख का बच्चा बोला।
मैं भी चलूँगा – चूज़ा बोला।

मैं गड्ढा खोद रहा हूँ –
बत्तख का बच्चा बोला।
मैं भी खोदूँगा –
चूज़ा बोला।

© NCERT not to be republished

मुझे एक केंचुआ मिला – बत्तख का बच्चा बोला।
मुझे भी – चूज़ा बोला।

मैंने एक तितली पकड़ी –
बत्तख का बच्चा बोला।

मैंने भी तितली पकड़ी –
चूज़ा बोला।

मैं तैरना चाहता हूँ – बत्तख का
बच्चा बोला।
मैं भी – चूज़ा बोला।

देखो मैं तैर रहा हूँ –
बत्तख का बच्चा बोला।

© NCERT not to be republished

मैं भी तैरूँगा –
चूज़ा बोला।

बचाओ... चूज़ा डूबते
हुए चिल्लाया।

बत्तख के बच्चे ने चूज़े को पानी
से बाहर निकाला।

नाम दो

चूज़ा बार-बार बत्तख के बच्चे की नकल करता रहता था। उसे चिढ़ानेवाला एक नाम दो।

.... चूज़ा।

क्या डूबेगा-क्या तैरेगा?

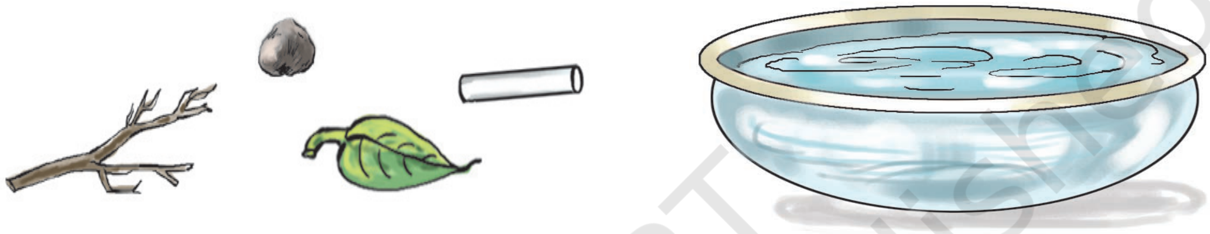

करके देखो और निशान लगाओ

चीज़ें	डूबेगा	तैरेगा
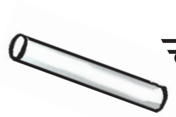 चॉक	√	
पत्थर		
रूई		
कागज़ 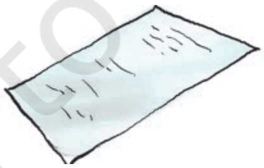		
टहनी		
पेंसिल		
छीलनी		

© NCERT not to be republished

13. लालू और पीलू

0117CH13

एक मुर्गी थी। मुर्गी के दो चूज़े थे।

एक का नाम था लालू। दूसरे का नाम था पीलू।

लालू लाल चीज़ें खाता था।

पीलू पीली चीज़ें खाता था।

एक दिन लालू ने एक पौधे पर कुछ लाल-लाल देखा।

लालू ने उसे खा लिया।

अरे, यह तो लाल मिर्च थी!

© NCERT not to be republished

लालू की जीभ जलने लगी। वह रोने लगा।
मुर्गी दौड़ी हुई आई। पीलू भी भागा। वह पीले–पीले गुड़ का टुकड़ा ले आया।

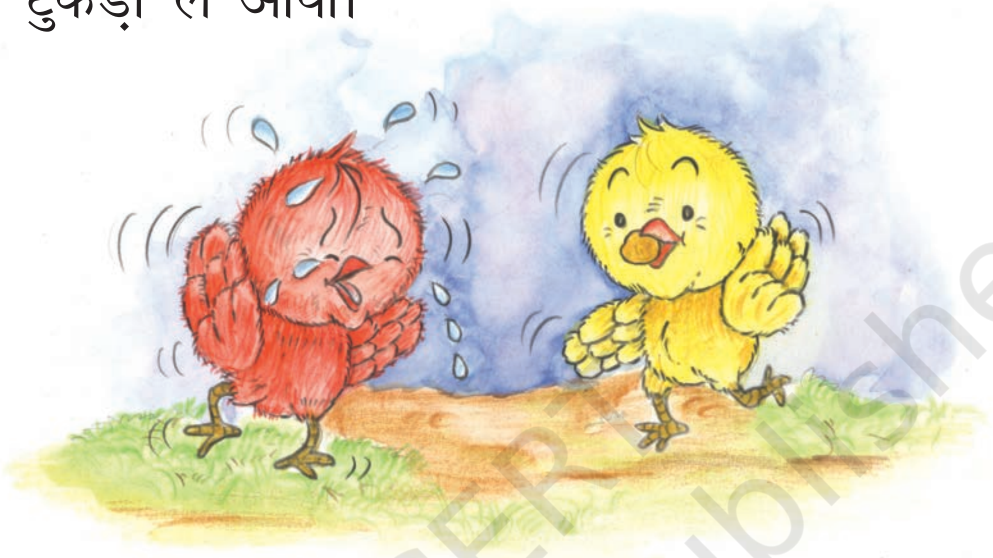

लालू ने झट गुड़ खाया। उसके मुँह की जलन ठीक हो गई।
मुर्गी ने लालू और पीलू को लिपटा लिया।

© NCERT not to be republished

क्या होता?

अगर लालू और पीलू को सफ़ेद और हरी चीज़ें पसंद होतीं तो क्या उनके नाम अलग-अलग होते?

....

फिर वे क्या-क्या खाते?

....

....

....

....

लाल मिर्च खाते ही लालू की जीभ जल गई। तुम्हारी जीभ क्या-क्या खाने-पीने से जलती है?

....

....

जीभ जलने पर तुम क्या करते हो?

....

....

....

© NCERT not to be republished

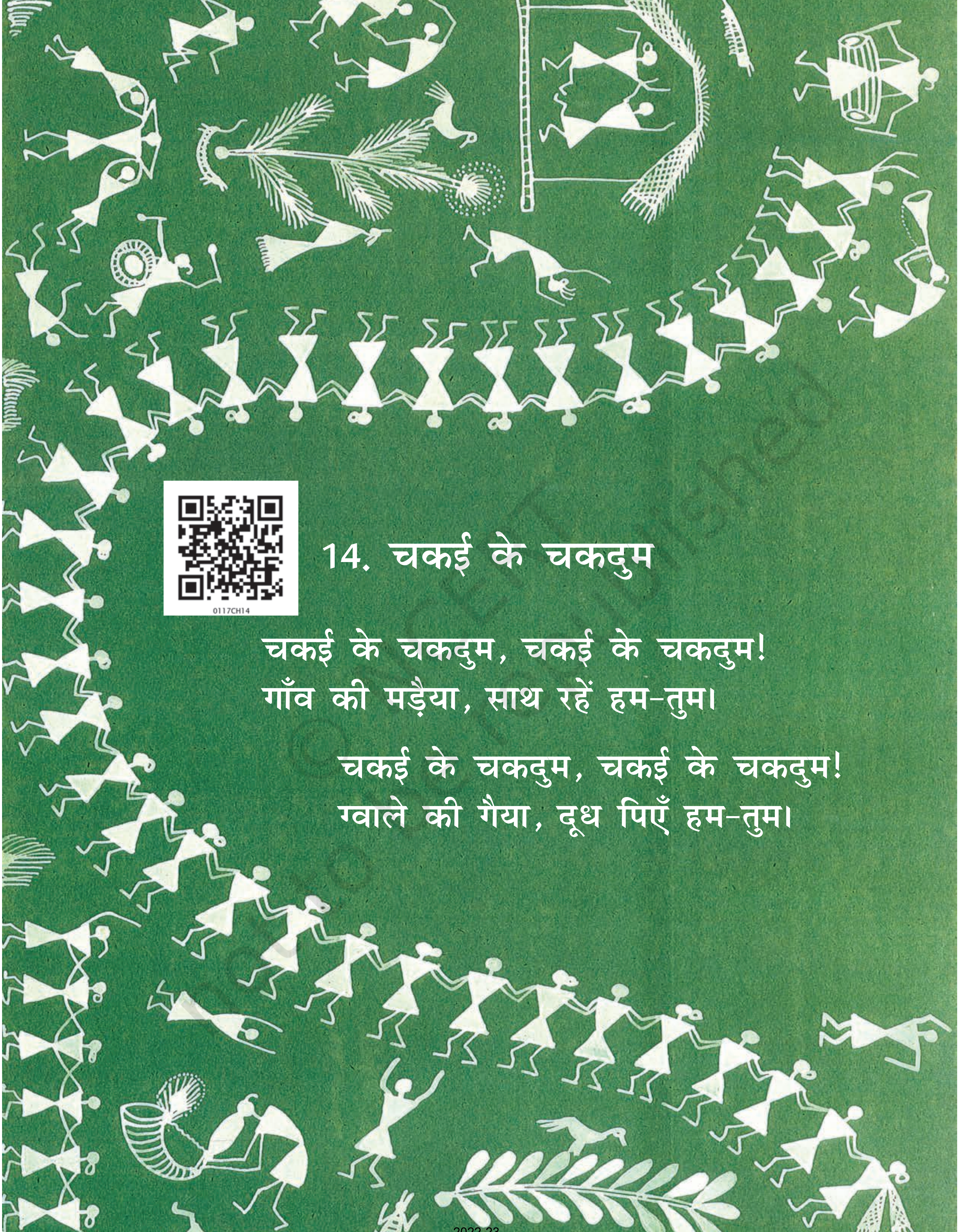

0117CH14

14. चकई के चकदुम

चकई के चकदुम, चकई के चकदुम!
गाँव की मड़ैया, साथ रहें हम-तुम।

चकई के चकदुम, चकई के चकदुम!
ग्वाले की गैया, दूध पिएँ हम-तुम।

© NCERT not to be republished

चकई के चकदुम, चकई के चकदुम!
कागज़ की नैया, पार करें हम-तुम।

चकई के चकदुम, चकई के चकदुम!
फुलवा की बगिया, फूल चुनें हम-तुम।

चकई के चकदुम, चकई के चकदुम!
खेल खतम भैया! आओ चलें हम-तुम!

not to be republished

2022-23

इस चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है?

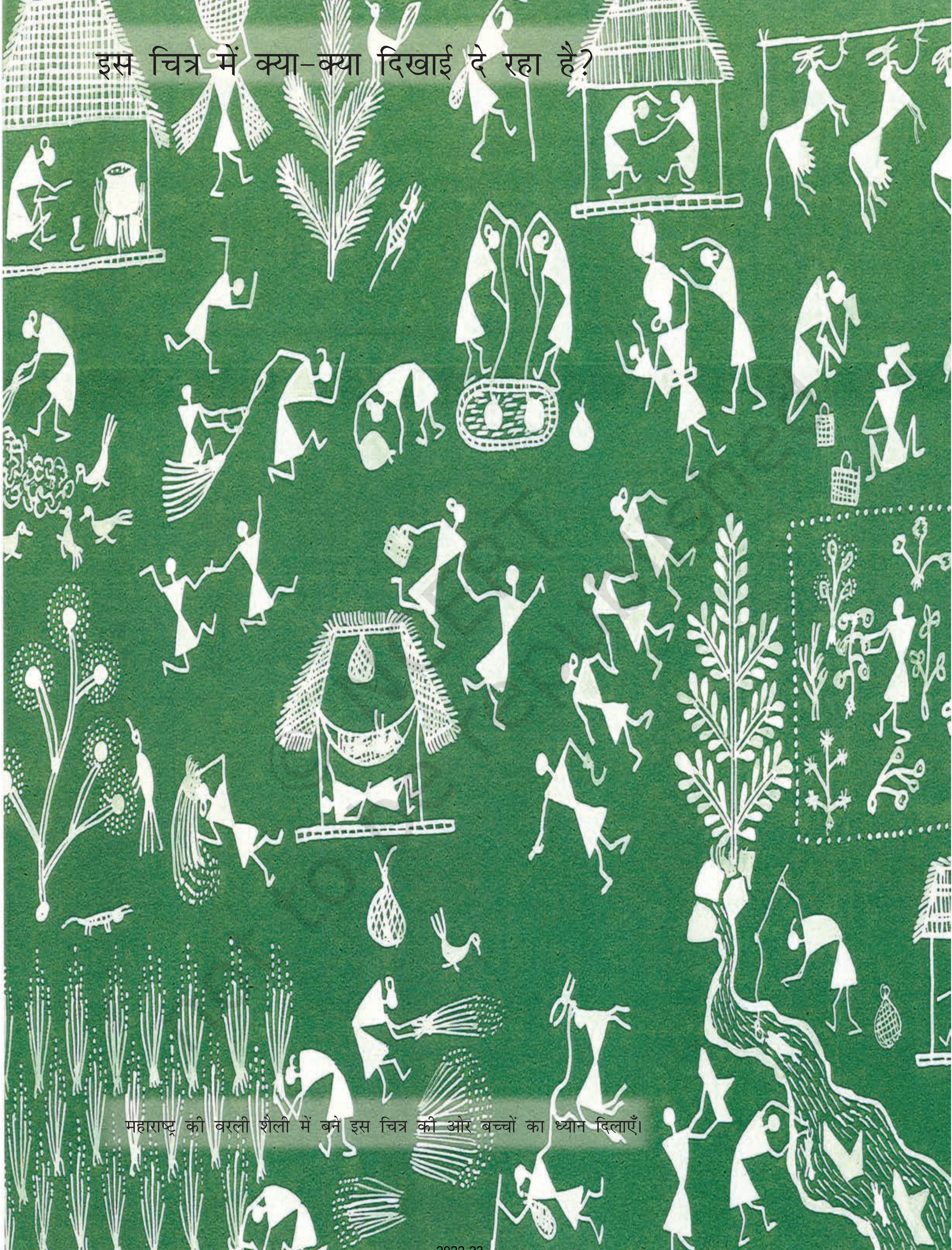

महाराष्ट्र की वरली शैली में बने इस चित्र की ओर बच्चों का ध्यान दिलाएँ।

हम-तुम, तुम-हम

चकई के चकदुम, कवि बनें हम-तुम।

चकई के चकदुम, चकई के चकदुम
अम्मा की रसोई, खाना खाएँ हम-तुम।

चकई के चकदुम, चकई के चकदुम
....
चकई ....
चकई के...

अब बनाकर देखो

पढ़ो और उसका चित्र बनाओ।

कागज़ की नैया,
पार करें हम-तुम।

गाँव की मड़ैया,
साथ रहें हम-तुम।

फुलवा की बगिया,
फूल चुनें हम-तुम।

© NCERT not to be republished

0117CH15

15. छोटी का कमाल

समरसिंह थे बहुत अकड़ते,
छोटी, कितनी छोटी।

मैं हूँ आलू भरा पराँठा,
छोटी पतली रोटी।

मैं हूँ लंबा, मोटा तगड़ा,
छोटी पतली दुबली।

मैं मोटा पटसन का रस्सा,
छोटी कच्ची सुतली।

लेकिन जब बैठे सी–सॉ पर,
होश ठिकाने आए,

छोटी जा पहुँची चोटी पर,
समरसिंह चकराए।

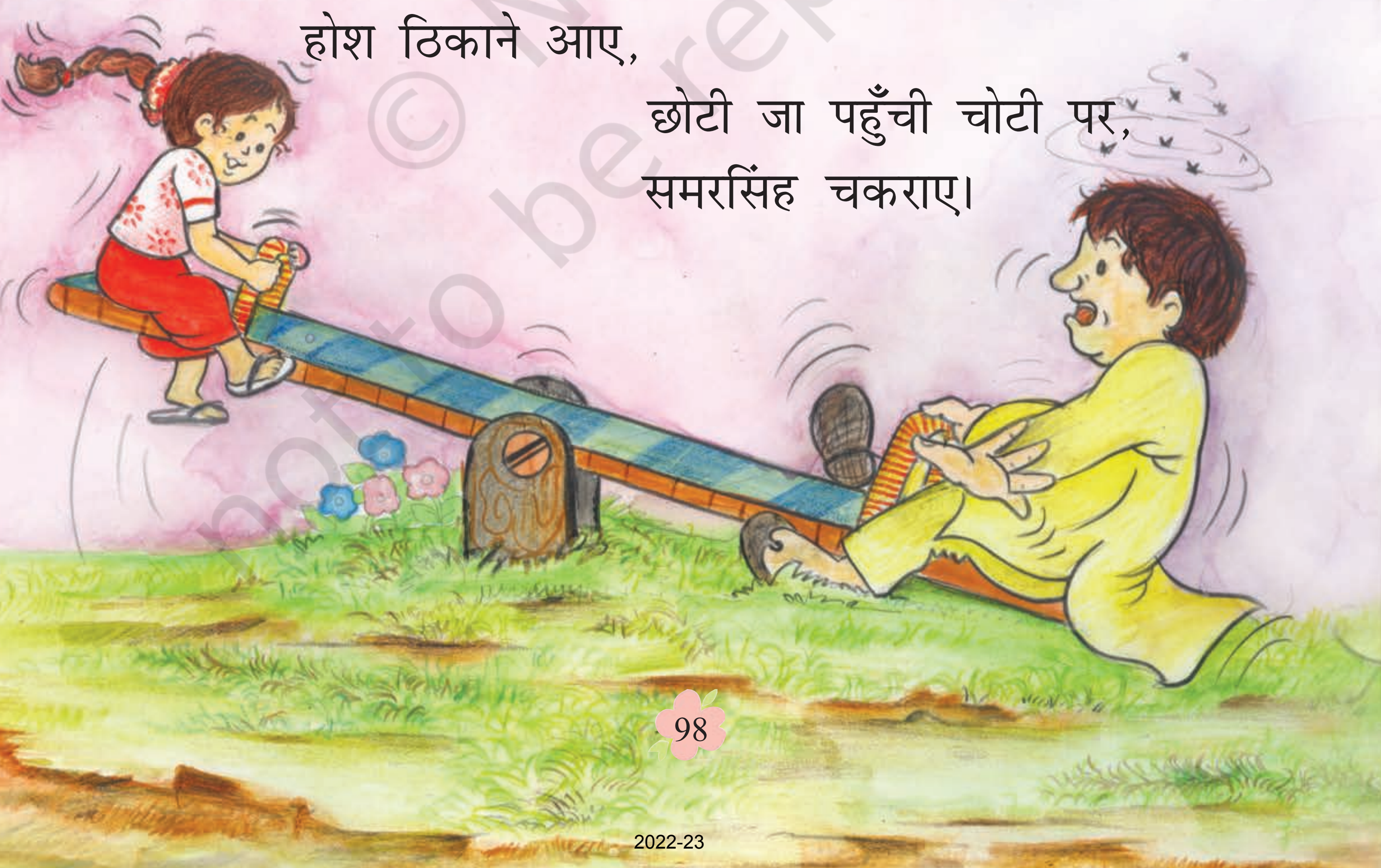

© NCERT not to be republished

पहुँचेगा कौन चोटी पर?

मोटा-तगड़ा समरसिंह नीचे रह गया।
पतली-दुबली छोटी ऊपर पहुँच गई।

बताओ इनमें से कौन ऊपर जाएगा, कौन नीचे रह जाएगा?

तुम तुम्हारा दोस्त/सहेली

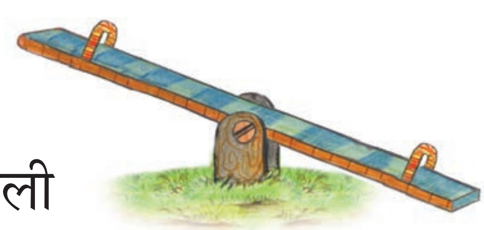

गोला लगाओ?

समरसिंह बहुत अकड़ते थे। इनमें से कौन-कौन अकड़ेगा?

राजा कक्षा का मॉनीटर सुहानी

पहलवान शेर चोर तुम्हारा दोस्त

- बच्चों से सी-सॉ पर चित्र बनवाए जा सकते हैं। बच्चों से पूछें सी-सॉ को वे अपनी भाषा में क्या कहते हैं?

© NCERT not to be republished

0117CH16

16. चार चने

पैसा पास होता तो चार चने लाते,
चार में से एक चना तोते को खिलाते।
तोते को खिलाते तो टाँय-टाँय गाता,
टाँय-टाँय गाता तो बड़ा मज़ा आता।

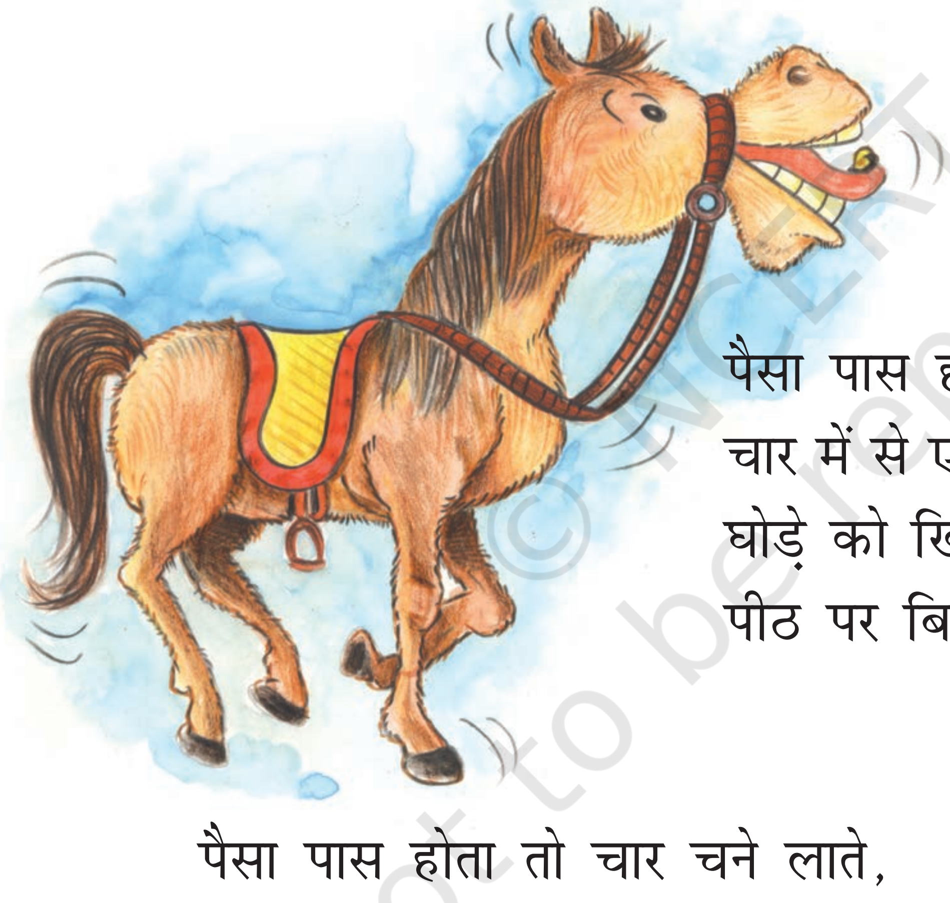

पैसा पास होता तो चार चने लाते,
चार में से एक चना घोड़े को खिलाते।
घोड़े को खिलाते तो पीठ पर बिठाता,
पीठ पर बिठाता तो बड़ा मज़ा आता।

पैसा पास होता तो चार चने लाते,
चार में से एक चना चूहे को खिलाते।
चूहे को खिलाते तो दाँत टूट जाता,
दाँत टूट जाता तो बड़ा मज़ा आता।

© NCERT not to be republished

चार चने होते तो

चार चने देकर इनसे क्या-क्या करवाया जा सकता है?

माली – ....

हलवाई – ....

दीदी – ....

दोस्त – ....

किसने खाया?

चार चने में से

एक चना .... को खिलाया।

दूसरा चना .... ।

तीसरा चना .... ।

एक चना बच गया, उसे किसे खिलाओगे?

....

....

© NCERT not to be republished

17. भगदड़

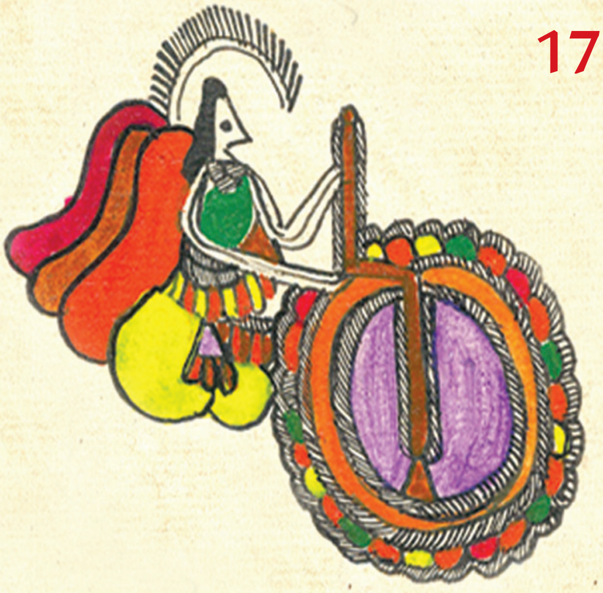

बुढ़िया चला रही थी चक्की,
पूरे साठ वर्ष की पक्की।
दोने में थी रखी मिठाई,
उस पर उड़कर मक्खी आई।

बुढ़िया बाँस उठाकर दौड़ी,
बिल्ली खाने लगी पकौड़ी।

झपटी बुढ़िया घर के अंदर,
कुत्ता भागा रोटी लेकर।

© NCERT not to be republished

बुढ़िया तब फिर निकली बाहर,
बकरा घुसा तुरंत ही भीतर।
बुढ़िया चली, गिर गया मटका,
तब तक वह बकरा भी सटका।

बुढ़िया बैठ गई तब थककर,
सौंप दिया बिल्ली को ही घर।

बिहार की मधुबनी शैली पर बने इन चित्रों पर बच्चों से बातचीत करें।

not to be republished

कौन-कौन आया?

बुढ़िया को परेशान करने कौन-कौन आया? चित्र बनाओ।

कौन किसके साथ? मिलाओ।

बुढ़िया	पकौड़ी
मक्खी	रोटी
बिल्ली	चक्की
कुत्ता	मिठाई

कविता में किसके बाद कौन आया?

सबसे पहले ....

उसके बाद ....

उसके बाद ....

अंत में ....

बच्चों से पूछें इस कविता का नाम भगदड़ क्यों रखा गया होगा?

© NCERT not to be republished

18. हलीम चला चाँद पर

हलीम ने एक दिन सोचा, आज मैं चाँद पर जाऊँगा।

वह रॉकेट के कारखाने में गया

और एक रॉकेट पर बैठकर चल दिया।

चलते-चलते अँधेरा हो गया।
हलीम को डर लगने लगा।
उसको तो चाँद तक का
रास्ता पता नहीं था।

थोड़ी देर में उसने
चाँद देखा और
वह खुश हो गया।

चाँद पर हलीम को
खूब सारे गड्ढे दिखे
और बड़े-बड़े पहाड़
भी। लेकिन वहाँ
कोई पेड़ या
जानवर नहीं थे।
लोग भी नहीं।

हलीम ने सोचा – ये
भी कोई जगह है!

चलो वापिस घर चलें।
वह रॉकेट में बैठकर
घर लौट आया।

रास्ते में क्या देखा?

हलीम को रास्ते में क्या-क्या दिखा होगा?

....

....

....

....

कहाँ जाओगे?

हलीम चाँद पर जाना चाहता था। तुम कहाँ जाना चाहती हो? कैसे जाओगी?

कहाँ	कैसे

© NCERT not to be republished

डर

हलीम को अँधेरे से डर लगता था।

तुम्हें कब-कब डर लगता है?

....

....

फिर तुम क्या करते हो?

....

....

चाँद और सूरज का चित्र बनाओ।

© NCERT not to be republished

19. हाथी चल्लम चल्लम

हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम,
हम बैठे हाथी पर, हाथी हल्लम हल्लम।
लंबी लंबी सूँड़ फटाफट, फट्टर फट्टर
लंबे लंबे दाँत खटाखट, खट्टर खट्टर।
भारी भारी मूँड़ मटकता, झम्मम झम्मम,
हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम।

पर्वत जैसी देह थुलथुली, थल्लल थल्लल
हालर हालर देह हिले, जब हाथी चल्लल
खंभे जैसे पाँव धपाधप, बढ़ते घम्मम,
हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम।

हाथी जैसी नहीं सवारी, अग्गड़–बग्गड़
पीलवान पुच्छन बैठा है, बाँधे पग्गड़
बैठे बच्चे बीच सभी हम, डग्गम डग्गम,
हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम।

दिनभर घूमेंगे हाथी पर, हल्लर हल्लर
हाथी दादा, ज़रा नाच दो, थल्लर थल्लर
अरे नहीं, हम गिर जाएँगे घम्मम घम्मम,
हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम।

© NCERT not to be republished

हाथी मेरे साथी

बताओ तो जानें!

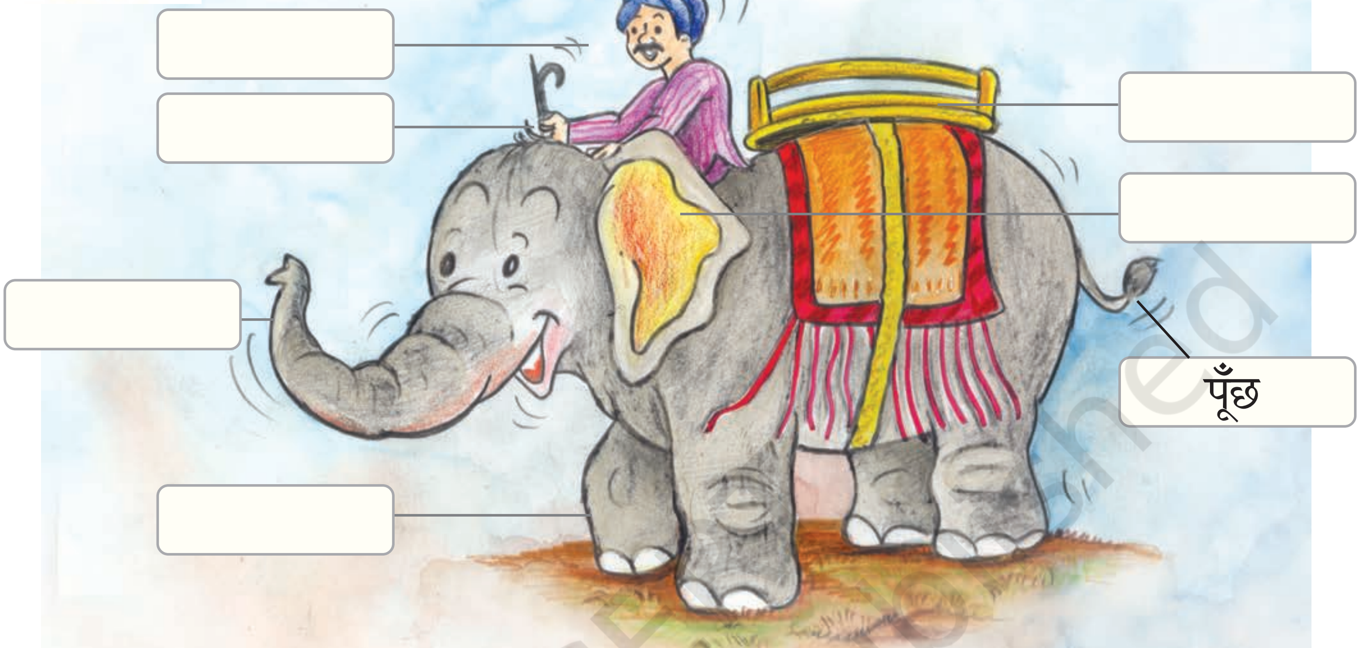

कौन कैसा?

कविता पढ़कर बताओ।

हाथी चल्लम .... चल्लम

सूँड़ ....

.... दाँत

.... सूँड़

देह ....

पाँव ....

बच्चे ....

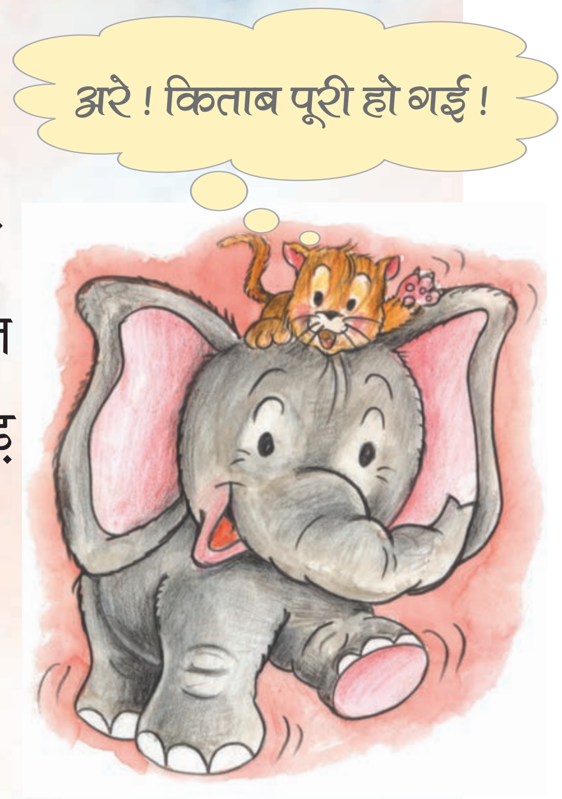

© NCERT not to be republished

वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

क्ष त्र ज्ञ श्र

© NCERT not to be republished

पुराने बच्चे

हम पहली के बच्चे हैं
अधरे पक्के कच्चे हैं।

एक साल हो गया हमें
इस विद्यालय में आए
पिछले पूरे साल में हमने
कितने मज़े उड़ाए।

रंग बिरंगे कागज़ काटे
काट काट चिपकाए
खेले कूदे, पढ़े लिखे
और ढेरों गाने गाए।

पूरी छोले, इडली सांभर
क्या क्या माल उड़ाए
घर जा कर अपने स्कूल के
किस्से खूब सुनाए।

आने वाले साल में भी हम
मिलकर मौज़ उड़ाएँगे
नई नई चीज़ें सीखेंगे
बढ़िया गाने गाएँगे

तुम सब जो इस साल आए हो
साथ हमारे खेलोगे
साथ साथ गाने गाओगे
संग संग झूले झूलोगे।

धीरे धीरे साथ-साथ हम
ऊपर चढ़ते जाएँगे
नए नए बच्चों को ऐसे
गाने सदा सुनाएँगे।

© NCERT not to be republished

रचनाकार - जिनकी कविता और कहानियाँ हमने पढ़ीं

	हरा समंदर गोपी चंदर	विश्वदेव शर्मा
1.	झूला	रामसिंहासन सहाय मधुर
2.	आम की कहानी	देबाशीष देव
3.	पत्ते ही पत्ते	वर्षा सहस्त्रबुद्धे
4.	पकौड़ी	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
5.	रसोईघर	मधु पंत
6.	चूहो! म्याऊँ सो रही है	धर्मपाल शास्त्री
	मकड़ी-ककड़ी-लकड़ी	अज्ञात
7.	बंदर और गिलहरी	प्रथम संस्था, दिल्ली से साभार
8.	पतंग	सोहनलाल द्विवेदी
9.	गेंद-बल्ला	निरंकारदेव सेवक
10.	बंदर गया खेत में भाग	सत्यप्रकाश कुलश्रेष्ठ
11.	एक बुढ़िया	निरंकारदेव सेवक
12.	मैं भी...	वी. सुतेयेव
13.	लालू और पीलू	विनीता कृष्ण
14.	चकई के चकदुम	रमेश तैलंग
15.	छोटी का कमाल	सफ़दर हाश्मी
16.	चार चने	निरंकार देव सेवक
17.	भगदड़	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
18.	हलीम चला चाँद पर	सी.एन. सुब्रमण्यम, एकलव्य
19.	हाथी चल्लम चल्लम	श्रीप्रसाद
	पुराने बच्चे	सफ़दर हाश्मी

© NCERT not to be republished

टिप्पणी

© NCERT not to be republished